सितम्बर 2019

दादावाणी

Retail Price ₹ 15

हम निरंतर ऐसा रखते हैं कि
जागृति रूपी दीपक जलता रहे।
हमारे अंदर रहे हुए सूक्ष्मतर और सूक्ष्मतम दोष
हमें रात-दिन दिखाई देते हैं,
हमें उन सभी दोषों के प्रतिक्रमण करने पड़ते हैं
जो केवलज्ञान को रोकते हैं।

वर्ष : 14 अंक : 11
अखंड क्रमांक : 167
सितम्बर 2019
पृष्ठ - 32

Editor : Dimple Mehta
© 2019
Dada Bhagwan Foundation
All Rights Reserved.
Printed & Published by
Dimple Mehta on behalf of
Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj,
Dist.-Gandhinagar - 382421

Owned by
Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj,
Dist.-Gandhinagar - 382421

Printed at
Amba Offset
B-99, GIDC, Sector-25,
Gandhinagar – 382025.

Published at
Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj,
Dist.-Gandhinagar - 382421

संपर्क सूत्र :
त्रिमंदिर, सीमंधरसिटी,
अहमदावाद-कलोल हाइ-वे,
पो.ओ.: **अडालज**,
जि.: गांधीनगर-382421.
फोन: (079) 39830100
email: dadavani@dadabhagwan.org
www.dadabhagwan.org
दादावाणी संबंधी शिकायत के लिए:
+91 8155007500

सबस्क्रिप्शन (सदस्यता शुल्क)
15 साल
भारत : 1500 रुपये
यू.एस.ए. : 150 डॉलर
यू.के. : 120 पाउन्ड
वार्षिक
भारत : 150 रुपये
यू.एस.ए. : 15 डॉलर
यू.के. : 12 पाउन्ड
भारत में D.D./M.O. 'महाविदेह फाउन्डेशन' के नाम से संपर्कसूत्र के पते पर भेजें।

दादावाणी

अहो! अहो! ये जागृत दादा!

संपादकीय

परम पूज्य दादा भगवान (दादाश्री) कहते थे, १९५८ में ज्ञान होने के बाद हमें उससे पहले के अपने जीवन के सारे दोष दिखाई देने लगे। रोज़ के तीन-तीन हज़ार दोष दिखाई देते थे, चार साल तक उनके प्रतिक्रमण करके सभी दोषों को साफ करके ज्ञानी पद तक पहुँचे। तो फिर प्रश्न ऐसा उठता है कि ज्ञानी पद पर पहुँचने के बाद वे कैसे और किसके प्रतिक्रमण करते होंगे? ज्ञानियों का प्रत्येक क्षण कल्याण के लिए ही होता है, तो उन्हें प्रतिक्रमण किसलिए? ऐसे कुछ गुह्य प्रश्नों के जवाब इस अंक में संकलित हुए हैं।

दादाश्री खुद की स्थिति का वर्णन करते हुए कहते हैं कि हमारी तो यदि एक बाल बराबर भूल भी हो जाए तो तुरंत ही पता चल जाता है! तो भीतर कैसी कॉर्ट होगी? कैसा जजमेन्ट होगा? हमारे प्रतिक्रमण तो उपयोग चूक जाने के होते हैं, कल्याण के निमित्त के लिए राग, हमारी खटपटें, स्याद्वाद चूक जाते हैं, उसके, दोष होने से पहले ही निरंतर प्रतिक्रमण चलते ही रहते हैं। ज्ञानी पुरुष की एक भी स्थूल या सूक्ष्म भूल नहीं होती! सूक्ष्मतर और सूक्ष्मतम भूलें ही होती हैं। जिनके वे खुद संपूर्ण रूप से ज्ञाता-द्रष्टा रहते हैं और वे भूलें किसी को नुकसानदेह नहीं होती, मात्र खुद के 'केवलज्ञान' को ही रोकती है!

पहले उदय में आ चुकी दशाओं में आज वे खुद नहीं हैं। आज खुद आत्मारूप हैं। फिर भी ज्ञान से पहले की दशा की बातें बताईं इसलिए उन्हें निश्चय की दृष्टि से साफ करना पड़ता है। कहते समय भी जागृति रहती है कि 'मैं यह नहीं हूँ'। वे खुद भी वे नहीं हैं। वे भी आत्मा हैं और मैं भी आत्मा हूँ।' फिर भी कहना उनके उदय में आया इसलिए साफ करना पड़ता है। प्रकट ज्ञान अवतार की यही अद्भुतता है। खुद का आत्मापना चूके बिना अज्ञान दशा में व्यवहार की भूलों की जो घटनाएँ उनके जीवन में हुईं, उन्हें ज़ाहिर कर दिया और साफ कर दिया। साथ ही यह बात भी उन्होंने ज़ाहिर कर दी कि निश्चय से भी तत्त्व दृष्टि नहीं चूकते थे। यों निश्चय के साथ-साथ व्यवहार से भी पूर्ण शुद्धता में आ गए।

दादाश्री बताते थे कि ऐसा तो कभी भी नहीं कह सकते, 'मुझ में भूल ही नहीं है।' भगवान महावीर को केवलज्ञान होने तक दोष दिखाई देते थे। भगवान को केवलज्ञान हुआ, वह समय और खुद के दोष दिखाई देना बंद होने का समय दोनों एक ही था। ऐसा नियम है कि अंतिम दोष का दिखाई देना बंद होना और इस तरफ केवलज्ञान प्रकट होना।

यहाँ पर दादाश्री की उच्च कोटि की आंतरिक परिणति उनके अपने ही शब्दों में व्यक्त हुई है, जिसे पढ़ते ही उनके प्रति अंदर से अहो भाव उत्पन्न होता है कि अपने दादा महान हैं! अब, ऐसे दादा की जागृति की बातें जानने के बाद, महात्माओं को खुद के पुरुषार्थ के लिए दोषों के स्वरूपों को पहचानकर, प्रतिक्रमण रूपी हथियार का उपयोग कैसे करना, उसकी सूक्ष्मतर और सूक्ष्मतम लेवल की समझ प्राप्त होती है और उस दिशा में महात्माओं का पुरुषार्थ होता रहे, यही अभ्यर्थना। - **जय सच्चिदानंद**

पाठकों से...

'दादावाणी' सामायिक में मुद्रित पाठ्य सामग्री मूलत: गुजराती 'दादावाणी' का हिन्दी रूपांतर है। कोष्ठक में दिए गए शब्द या तो अंग्रेज़ी शब्द का अर्थ हैं अथवा शब्द का तात्पर्य स्पष्ट करने हेतु वृद्धित किए गए वाक्यांश है। यहाँ पर 'आत्मा' शब्द को गुजराती और संस्कृत की तरह पुल्लिंग में प्रयोग किया गया है। जहाँ पर भी 'चंदूभाई' नाम का प्रयोग हुआ है, वहाँ पर पाठक खुद को समझें। 'दादावाणी' के इस अंक में अगर आप कोई बात न समझ पाएँ तो प्रत्यक्ष सत्संग में पधारकर समाधान प्राप्त करें। अनुवाद में कोई कमी नज़र आए तो हमें सूचित करने की कृपा करें, ताकि भविष्य में सुधार किया जा सकें। ऐसी क्षतियों के लिए हम आपके क्षमाप्रार्थी है।

अहो! अहो! ये जागृत दादा!

आवरण दोष नहीं देखने देते

प्रश्नकर्ता : अब खुद की प्रकृति दिखाई देने लगी है, सबकुछ दिखाई देता है, मन-बुद्धि-चित्त-अहंकार सब दिखाई देता है पर उसकी स्टडी किस तरह करनी? उनके सामने ज्ञान कैसे काम करना चाहिए? कैसी जागृति रहनी चाहिए?

दादाश्री : खुद की प्रकृति तो हमें पता ही चल जाती है। उसका हमें पता ही चल जाता है कि प्रकृति ऐसी ही है और कम पता चला हो तो दिनोंदिन समझ बढ़ती जाएगी! पर अंत में 'फुल' समझ में आ जाएगी। हमें सिर्फ यही करना है कि ये चंदूभाई जो भी कर रहे हैं, वह देखते रहने की ज़रूरत है, वही शुद्ध उपयोग है।

प्रश्नकर्ता : खुद की प्रकृति को देखना होता है, उसमें देख नहीं पाएँ और चूक जाएँ तो वहाँ कौन सी चीज़ काम कर रही होती है?

दादाश्री : आवरण। उस आवरण को तोड़ना पड़ेगा वह तो।

प्रश्नकर्ता : वह किस तरह टूटेगा?

दादाश्री : जैसे-जैसे अपने यहाँ दिनोंदिन विधियों से टूटता जाता है, वैसे-वैसे दिखाई देता है। यह सब तो आवरणमय ही था, कुछ दिखाई नहीं देता था, वह धीरे-धीरे दिखने लगा है। वह आवरण देखने नहीं देते हैं सबकुछ। अभी सारे दोष नहीं दिखाई दे सकते। कितने दिखाई देते हैं? दस-पंद्रह दिखाई देते हैं?

प्रश्नकर्ता : बहुत दिखाई देते हैं।

दादाश्री : सौ-सौ?

प्रश्नकर्ता : चेन चलती रहती है।

दादाश्री : फिर भी पूरे नहीं दिखाई देते। आवरण रहते हैं न फिर! बहुत दोष होते हैं। विधि करते समय भी हम से सूक्ष्मतर और सूक्ष्मतम दोष होते रहते हैं न, जो सामने वाले को नुकसान नहीं करे ऐसा होता है पर वह दोष हम से होता है, हमें वह पता चलता है। तुरंत हमें उसे साफ करना पड़ता है, चलेगा ही नहीं न? जितने दिखाई दें उतने तो साफ करने ही पड़ते हैं।

देखे रोज़ के तीन हज़ार दोष

सन 1958 में जब ज्ञान हुआ न, उसके बाद कुछ दोष तो भीतर भरे हुए ही थे, वे सभी दोष दिखाई देने लगे। उसके बाद वे चले गए। रोज़ के तीन-तीन हज़ार दोष दिखाई देते थे। बाद में वे सभी चले गए। लेकिन हमारा केवलज्ञान किसलिए रुका हुआ है? तब कहे, काल का हिसाब तो है। लेकिन काल के हिसाब का तो ऐसा है कि अगर अभी हम काल को बदल दें तो? तब कहेंगे, 'नहीं, दोष भी हैं।' यह पूरा निरा दोषों का ही भंडार हैं। ये सभी क्रोध-मान-

माया-लोभ किससे उत्पन्न हुए हैं? सभी दोषों से ही उत्पन्न हुए हैं।

अब, कई दोष दिखाई देते हैं फिर भी वे जाते नहीं हैं। उसका क्या कारण है कि वे दोष भारी होते हैं। जैसे प्याज़ की परतें होती हैं न, यदि वह एक भी दिखाई दी तो एक परत जाएगी ही। फिर दूसरी परत भी जाएगी लेकिन अंत में सभी खत्म तो होंगी न? एक-एक परत दिखाई दी तो जाएगी ही। दोष का नियम हमेशा कैसा है कि जो दोष दिखाई दिया, वह जाएगा ही, उसे जाना ही पड़ेगा। खुद को निष्पक्षपाती रूप से दिखाई दिया कि यह दोष है तो उसे जाना ही पड़ेगा। हमारे भी इसी तरह से चले गए।

हमारी जागृति 'टोप' पर है। आपको पता भी नहीं चलता लेकिन आपके साथ बोलते समय जहाँ हमारी भूल होती है, वहाँ हमें तुरंत पता चल जाता है और तुरंत उसे धो देते हैं। उसके लिए प्रतिक्रमण रूपी यंत्र रखा हुआ है, जिससे तुरंत ही धुल जाता है। हम खुद निर्दोष हुए हैं और पूरे जगत् को निर्दोष ही देखते हैं। अंतिम प्रकार की जागृति कौन सी, कि जगत् में कोई दोषित दिखाई ही नहीं दे। हमें ज्ञान के बाद रोज़ के हज़ारों दोष दिखने लगे थे। जैसे-जैसे दोष दिखते जाते हैं, वैसे-वैसे दोष घटते जाते हैं और जैसे दोष घटते हैं, वैसे 'जागृति' बढ़ती जाती है। अब हमारे सिर्फ सूक्ष्मतर और सूक्ष्मतम दोष बचे हैं, जिन्हें हम 'देखते' हैं और 'जानते' हैं।

जागृति का दीपक दिखाता है निजदोष

प्रश्नकर्ता : आपकी जागृति कैसी होती है?

दादाश्री : जैसे दीया जल रहा हो, वैसा रखते हैं हम। अरे! जैसे लाइट जल रही हो। फिर निरंतर वह दीया प्रज्वलित रहता है। रात-दिन तीर्थंकरों को जो निजदोष दिखाई देते हैं, वैसे दोष हमें भी दिखाई देते हैं। संसार के लोग तो वहाँ तक कभी भी नहीं पहुँच सकते लेकिन ऐसी जगह के दोष हमें दिखाई देते हैं, जो तीर्थंकरों को दिखाई देते हैं, वे!

प्रश्नकर्ता : सभी के?

दादाश्री : नही, नहीं। सिर्फ, हमारे ही। सभी के देखकर मुझे क्या करना है? हम तो किसी और के दोष देखते ही नहीं। दोष दिखाई देते हैं लेकिन हम उन्हें दोषित नहीं देखते। हम तो निर्दोष ही देखते हैं। दोष दिखते ही उसे हम निर्दोष देख लेते हैं।

सामने वाले के बिल्कुल भी दोष न दिखाई दें, खुद के दोष देखने से फुरसत ही न मिले, उसे जागृति कहते हैं।

अंतिम लाइट के सामने हमारा कच्चा लगता है

प्रश्नकर्ता : परंतु हमें तो आपका सभी कुछ आदर्श ही दिखाई देता है।

दादाश्री : वैसा लगता है, पर मैं ज्ञानरूप से देखता हूँ, अंतिम स्थिति के चश्मे से देखता हूँ, इसलिए अंतिम लाइट से यह सब कच्चा लगता है।

कुछ लोग मुझे कहते हैं कि 'दादा, आपके साथ बैठकर हम भोजन करना सीख गए।' अब मैं अपने आप को जानता हूँ न कि मुझे भोजन करना ही नहीं आता। भोजन करने वाले का फोटो कैसा होना चाहिए, कैसा चारित्र होना चाहिए, वह हमें लक्ष (जागृति) में होता ही है।

स्थूल से सूक्ष्मतम तक की भूलों की परिभाषा

जगत् दो तरह की भूलें देख सकता है, एक स्थूल और एक सूक्ष्म। स्थूल भूलें बाहर की पब्लिक भी देख सकती है और सूक्ष्म भूलें बुद्धिजीवी देख सकते हैं। ये दो भूलें 'ज्ञानी पुरुष'

में नहीं होतीं! फिर सूक्ष्मतर दोष, वे ज्ञानियों को ही दिखाई देते हैं। हम सूक्ष्मतम में बैठे हुए हैं।

हमारे भीतर कौन से दोष हैं? ज्ञानी पुरुष में? ज्ञानी पुरुष में ऐसी स्थूल भूलें नहीं होतीं जो दिखाई दें। इन दोषों की परिभाषा आपको बताता हूँ।

स्थूल भूल यानी क्या? मुझ से कोई भूल हो, तो जो जागृत इंसान होगा, वह समझ जाएगा कि इनसे कोई भूल हो गई। स्थूल अर्थात् यहाँ पर सभी लोग बुद्धि का उपयोग किए बगैर यों इन्द्रियों से ही समझ जाएँगे कि इनका दोष है।

सूक्ष्म भूल यानी कि यहाँ पच्चीस हज़ार लोग बैठे हों, तो मैं समझ जाता हूँ कि दोष हुआ लेकिन उन पच्चीस हज़ार में से मुश्किल से पाँचेक ही सूक्ष्म भूल को समझ सकेंगे। सूक्ष्म दोष तो बुद्धि से भी देख सकते हैं। सूक्ष्म दोष अर्थात् बुद्धिपूर्वक, इनमें से सभी को समझ में नहीं आएगा। अगर कोई बुद्धिशाली हो न, तो उसे समझ में आ जाएगा कि इनकी भूल है।

जबकि सूक्ष्मतर और सूक्ष्मतम भूलें, ज्ञान से ही दिखाई देती हैं। सूक्ष्मतर और सूक्ष्मतम दोष मनुष्य को नहीं दिखाई देते। देवी-देवताओं को भी, अवधिज्ञान से देखने पर ही दिखाई देते हैं फिर भी वे दोष किसी को नुकसान नहीं पहुँचाते। हमारे दोष ऐसे होते हैं कि जो किसी भी जीव को किंचित्मात्र दुःख न दे। जो हमारे लिए बाधक होते हैं। अर्थात् वैसे सूक्ष्मतर और सूक्ष्मतम दोष हम में रहे हुए हैं और वह भी इस कलिकाल की विचित्रता के कारण!

सूक्ष्मतर और सूक्ष्मतम दोषों के करते हैं खुलासे

प्रश्नकर्ता : दादा, अब आपने जो स्थूल दोष, सूक्ष्म दोष, सूक्ष्मतर और सूक्ष्मतम दोष बताए हैं, उनमें से सूक्ष्मतर और सूक्ष्मतम दोष कौन से हैं?

दादाश्री : सूक्ष्मतम और सूक्ष्मतर दोष वे हैं जो किसी को नुकसान नहीं पहुँचाते, खुद के भीतर क्रोध-मान-माया-लोभ रहते हैं लेकिन वे किसी को नुकसान नहीं पहुँचाते ऐसे होते हैं। उतनी कमज़ोरी रहती है। वे किसी को नुकसान नहीं पहुँचाते, जो खुद का ही नुकसान करें, वे सूक्ष्मतर दोष हैं। और सूक्ष्मतम दोष तो खुद का भी नुकसान नहीं करते और किसी का भी नुकसान नहीं करते। सिर्फ, सूक्ष्मतम दोषों की वजह से उनकी आगे की प्रगति थोड़ी सी रुक गई हो, तो वह भी फिर से शुरू हो जाती है।

प्रश्नकर्ता : ऐसा कोई उदाहरण दीजिए न!

दादाश्री : यह हमारी जो चार डिग्री कम हैं न! वह सूक्ष्मतम दोषों की वजह से।

प्रश्नकर्ता : कोई फिज़िकल उदाहरण दीजिए न!

दादाश्री : उसके उदाहरण नहीं होते, सूक्ष्मतम के उदाहरण ही नहीं होते न! मेरी जो चार डिग्री कम हैं न, उसकी तुलना करने लायक कोई चीज़ ही नहीं है क्योंकि हम तुलना करने वाली चीज़ों से बाहर निकल चुके हैं। बुद्धि से बाहर निकल चुके हैं। बुद्धि की रेखा को ही पार कर लिया है।

उपयोग चूकने पर प्रतिक्रमण

मुझे भी प्रतिक्रमण करने होते हैं। मेरे अलग प्रकार के और आपके भी अलग प्रकार के होते हैं। मेरी भूल आपको बुद्धि से पता नहीं चल सके, ऐसी होती है। यानी कि वे सूक्ष्मतर और सूक्ष्मतम होती हैं। उसके हमें प्रतिक्रमण करने पड़ते हैं। हमें तो उपयोग चूकने पर भी प्रतिक्रमण करना पड़ता है। उपयोग चूक गए, वह हमें तो पुसाएगा ही नहीं न? हमें इन सब के साथ बातें

भी करनी पड़ती हैं, सवालों के जवाब भी देने पड़ते हैं, इसके बावजूद हमें हमारे उपयोग में ही रहना होता है।

जब तक हम में साहजिकता होती है तब तक हमें प्रतिक्रमण की आवश्यकता नहीं होती। साहजिकता में प्रतिक्रमण आपको भी नहीं करने पड़ते। साहजिकता में फर्क पड़ा कि प्रतिक्रमण करना पड़ेगा।

सूक्ष्मता, ज्ञानी के प्रतिक्रमणों की

पेशाब करने गए, वहाँ यदि एक चींटी बह जाए तो हम प्रतिक्रमण करते हैं, उपयोग नहीं चूकते। बह गई वह 'डिस्चार्ज' है लेकिन उस वक्त अप्रतिक्रमण दोष क्यों हुआ? जागृति क्यों मंद हो गई? उसका दोष लगता है।

टाइम पर विधि करना भूल गए और फिर बाद में याद आया तो प्रतिक्रमण करके फिर बाद में करते हैं।

हम दो लोगों को अलग करते हैं तो उसका भी दोष लगता है इसलिए प्रतिक्रमण करते हैं।

प्रश्नकर्ता : आप कर्ताभाव से नहीं करते, फिर भी?

दादाश्री : चाहे किसी भी भाव से करें लेकिन सामने वाले को दुःख हो जाए ऐसा किया इसलिए प्रतिक्रमण करना पड़ता है।

'डिस्चार्ज' में जो अतिक्रमण होते हैं, उनके हम प्रतिक्रमण करते हैं। सामने वाले को दुःख पहुँचे, ऐसे डिस्चार्ज के प्रतिक्रमण करने पड़ते हैं। यहाँ महात्माओं का या दादा का कुछ अच्छा किया हो उसका प्रतिक्रमण नहीं करते लेकिन बाहर किसी का अच्छा किया तो उसका प्रतिक्रमण करना पड़ता है क्योंकि उपयोग चूक गए, उसका प्रतिक्रमण करना पड़ेगा।

जगत् में पोल चलेगी नहीं

मैं 'ज्ञानी पुरुष' हूँ, इसलिए मुझे तो, 'ज्ञानी पुरुष' को त्यागात्याग संभव नहीं है, फिर भी मुझे पानी का बिगाड़ करना पड़ता है। हमें इस पैर में तकलीफ हुई है इसलिए डबल्यु सी में बैठना पड़ता है फिर पानी के लिए ज़ंज़ीर खींचते हैं, तो कितने डिब्बे पानी बह जाता होगा? क्या इसलिए कि पानी की कमी है या पानी कीमती है? नहीं, लेकिन इस तरह से पानी के कितने ही जीव टकरा-टकराकर बिना बात के मारे जाते हैं! और जहाँ एक-दो डब्बों से काम चल जाए ऐसा है, वहाँ इतने सारे पानी का बिगाड़ क्यों करें? जबकि हम तो 'ज्ञानी पुरुष' हैं, इसलिए ऐसी भूल होते ही हम तो तुरंत दवाई (प्रतिक्रमण) डाल देते हैं। उससे कितने ही महीनों तक हमारा काम चलता रहता है लेकिन फिर भी दवाई तो हमें भी डालनी पड़ती है। क्योंकि वहाँ ऐसा नहीं चलेगा, 'ज्ञानी पुरुष' हों या कोई भी हों, लेकिन कुछ नहीं चलेगा। यह अंधेर नगरी नहीं है। यह तो वीतरागों का राज है, चौबीस तीर्थंकरों का राज है!

जहाँ उल्टा किया है वहाँ सीधा करना पड़ेगा

हमारे भीतर सूक्ष्मतर और सूक्ष्मतम दोष रहे हुए हैं। लोगों का हिसाब चुकाना बाकी है, ऋणानुबंध है। जो हिसाब हम ने उस समय बांधा था जिसे गाली दी थी, उसे साफ करना है। जहाँ उल्टा किया, वहाँ सीधा करके आना है और जहाँ सीधा किया, वहाँ नियमानुसार सबकुछ खत्म करना है। आपको यह बात समझ में आई या नहीं?

प्रश्नकर्ता : आई।

दादाश्री : मैं सूक्ष्मतर दोष और ऐसा सब बता रहा था न? उनके बारे में यदि इन लोगों को नहीं बताऊँगा तो नहीं चलेगा?

प्रश्नकर्ता : क्योंकि जैसा है वैसा कहने वाले हैं तो फिर...

दादाश्री : लोग तो ऐसा ही पूछते हैं कि आपके दोष कैसे होते हैं, हमें वह जानना है। लेकिन मैं कह रहा था कि, 'भाई, अभी हमारे इतने गए हैं और इतने बाकी हैं। उन सभी को मैं जानता हूँ, वर्ना, मुझे केवलज्ञान हो जाता। ये कपड़े पहनता हूँ, वह भी दोष ही है। अँगूठी पहनता हूँ, वह भी दोष है। वे सभी दोष, वे सूक्ष्मतर दोष हैं।' वे अन्य किसी को नुकसान नहीं पहुँचाते और सूक्ष्मतम तो फिर इससे भी अलग ही प्रकार के होते हैं। वे तो बहुत ही सूक्ष्म होते हैं।

प्रश्नकर्ता : सूक्ष्मतम कैसे होते हैं?

दादाश्री : अरे! आप यदि सूक्ष्मतर समझ जाओ तो भी बहुत हो गया न! सूक्ष्मतम की बात क्यों कर रहे हो?

प्रश्नकर्ता : जो लाचारी से करनी पड़ें, क्या वे सारी चीज़ें सूक्ष्मतर हैं? जब आप खाना खाने गए, तब आप पूछ रहे थे न, कि, 'मुझे यह अपनी इच्छा से खाना है या बगैर इच्छा के?'

दादाश्री : हाँ, ठीक... बगैर इच्छा के खाना पड़ता है, वर्ना, भला खाना खाया जाता होगा?

निर्जीव अहंकार को भी निकालना पड़ेगा

प्रश्नकर्ता : दादा में ज़रा सा अहंकार तो होगा न?

दादाश्री : वह इस पटेल में, जो चार डिग्री कम हैं न, वह अहंकार भी लेकिन कैसा है? निर्जीव अहंकार है, जीवित नहीं है। निर्जीव अहंकार ड्रामेटिक (नाटकीय) होता है। ड्रामा में भर्तृहरि अंदर ही अंदर जानता ही है कि, 'मैं लक्ष्मीचंद हूँ', उसी तरह से मैं भी जानता हूँ कि 'मैं तो दादा भगवान ही हूँ' और यह निर्जीव अहंकार है।

वह निर्जीव अहंकार क्या करता है? शर्ट पहनता है, जूते पहनता है और यदि गंदा हो तो निकालवा देता है। साफ-सुथरा पहनवाता है। खटपट करता है, 'आना चंदूभाई, मैं आपको ज्ञान दूँगा, मैं आपको समझाऊँगा।' वे खटपट कहलाएगी या नहीं? क्यों? भगवान क्या ऐसा कहते हैं कि 'आना'? वे तो वीतराग कहलाते हैं! वे तो ऐसा कुछ भी नहीं कहते, 'आना और जाना' जबकि मैंने ऐसा कहा था न, कि मैं आपको मोक्ष दूँगा! यह खटपट क्यों? अत: हम खटपटिया वीतराग हैं! ऐसी खटपट करते हैं और वीतराग दशा में रहते हैं। यह चार डिग्रियों का हमारा जो अहंकार बचा है, वह निर्जीव अहंकार है। वह फिर से सजीवन नहीं होगा। जो नाटक का भाग है न, 'ए. एम. पटेल' नाम का, वह रोल पूरा हो रहा है।

प्रश्नकर्ता : दादा, आप में तो निर्जीव अहंकार भी कहाँ है?

दादाश्री : वह नहीं है, फिर भी अभी जो बाकी है, उसे निकाल रहा हूँ।

प्रश्नकर्ता : वह किस तरह? समझ में नहीं आया?

दादाश्री : उसे मैं समझ सकता हूँ न! मैं क्या यों ही कुछ कच्चा हूँ? आप लोगों को क्या ऐसा लगता है कि कोई मुझे बुद्धू बना जाएगा। ऐसा लगता है?

प्रश्नकर्ता : नहीं।

दादाश्री : किसी से भी प्रभावित हो जाएँ, ऐसा लगता है क्या?

प्रश्नकर्ता : यह नहीं जानना है कि दादा

प्रभावित हो जाते हैं। अहंकार निकालना है, हमें उसके बारे में जानना था।

दादाश्री : शुद्धात्मा रूप से अलग रहो और चंदू से कहो कि 'पैर छूओ।' जबकि क्रमिक मार्ग के ज्ञानी किसी के पैर नहीं छूते और क्रमिक मार्ग वालों को इसमें आपत्ति है। हमें तो कोई आपत्ति नहीं है न! हम तो इन सभी नागा साधुओं के पैर छूकर यों नमस्कार करते हैं। आपने नहीं देखा?

प्रश्नकर्ता : देखा है न!

दादाश्री : तो आपके मन में वह ज़रा खराब लगेगा। लेकिन अभी भी मेरा कहा समझो। सिर्फ यही कहते हैं कि इसे समझो। यही अहंकार है। 'नहीं करना', वह भी अहंकार है और 'करना', वह भी अहंकार है।

प्रश्नकर्ता : हाँ, तो यह तो आपको करने का आया न?

दादाश्री : वहाँ हमारा होता है। हम करते हैं या नहीं, उसे आप नहीं जानते।

प्रश्नकर्ता : दर्शन करते हैं या नहीं, उसे आप नहीं जानते। उसे हमें जानना हैं न, दादा।

दादाश्री : नहीं! यानी कि हम सभी जगह करते हैं या कुछ ही जगह पर होता है, वह आपको देखते रहना है।

प्रश्नकर्ता : हाँ, सभी जगह पर नहीं होता।

दादाश्री : इसलिए देखो। उसका पता लगाओ न! मैं जिस निर्जीव अहंकार को निकालने के लिए ये शब्द कह रहा हूँ न, वह भी अहंकार है। बोलो अब? मैं जो ऐसा कहता हूँ कि ये सभी निकालने पड़ेंगे। 'वह भी बता रहा हूँ' वह भी अहंकार है। उसे बार-बार डाँटा, वह भी अहंकार है।

ज़रा सा बाकी है इसलिए रास्ता पूर्ण नहीं हुआ

अहंकार दो प्रकार के हैं। एक डिस्चार्ज होता हुआ (मृतप्राय) अहंकार, जो लट्टू जैसा है और दूसरा चार्ज होता हुआ (जीवित) अहंकार, जो शूरवीर जैसा है। लड़ता भी है, झगड़ता भी है, सभी कुछ करता है। डिस्चार्ज अहंकार के हाथ में तो कुछ भी नहीं है बेचारे के, मानो जैसे लट्टू घूम रहा हो। अर्थात् अहंकार के बगैर तो दुनिया में कुछ हो ही नहीं पाता।

प्रश्नकर्ता : क्या आपके लिए सहज हो चुका है सबकुछ?

दादाश्री : फिर भी किसी जगह पर छूते ही (डिस्चार्ज) अहंकार खत्म हो जाता है तब सहज हो जाता है। सहज है, फिर भी किसी-किसी जगह पर ये रह जाते हैं, छींटे (निशान)। क्योंकि रास्ता पूर्ण नहीं हुआ है तब तक कुछ छींटे रहते हैं। तभी पूर्ण नहीं हो पाता न! उसके लिए नहीं लेकिन जो छींटे रह गए हैं, उनके अलावा क्या है? तो कहते हैं, 'सबकुछ सहज है।' और आपको भी कुछ-कुछ सहज होता जा रहा है लेकिन छींटे ज़रा ज़्यादा हैं इसलिए आपको ऐसा ही लगता है कि लाल (संलग्न) ही दिख रहा है।

प्रश्नकर्ता : उसी को चित्रण कहते हैं न?

दादाश्री : वह तो अभी तक हिसाब नहीं चुकाया है। चित्रण का तो ऐसा है न कि जिसका प्रोजेक्ट किया होता है, उसी चीज़ का चित्रण आता है।

दर्शन करके, निकाला अहंकार

यानी कि जहाँ-जहाँ पर दादा दर्शन करते हैं, वहाँ ऐसा ही समझना है कि दादा ने अपने भीतर का ऐसा जो अहंकार था, उसे निकाल दिया।

प्रश्नकर्ता : वह तो आज आपने बताया तब पता चला, वर्ना हमें कैसे पता चलता? हम तो ऐसा ही मानते थे कि दादा में अहंकार है ही नहीं।

दादाश्री : हाँ वह नहीं है, वह तो मैं भी जानता हूँ, लेकिन जो है...

प्रश्नकर्ता : लेकिन उसे हम कैसे समझ सकते हैं...

दादाश्री : हम बार-बार जो कहते हैं, वह आपको याद नहीं है? हम लोगों से कहते हैं कि 'भाई, हमारी ऐसी वे भूलें चली गई हैं जो दिखाई दें। फिर जो बुद्धि से समझ में आ सकती हैं, वे भी चली गई हैं। और जो सूक्ष्मतर और सूक्ष्मतम भूलें हैं जो कि किसी को नुकसानदेह नहीं हैं, ऐसी भूलें अभी भी रही हुई हैं।' ऐसी...

प्रश्नकर्ता : दूसरों को पता चले ऐसी भी नहीं हैं, वे।

दादाश्री : वे ऐसी नहीं हैं कि किसी को पता चले और अब, वे भूलें हैं फिर भी मैं उनसे कहता हूँ, वे नहीं समझ सकते कि दादा यह क्या कर रहे हैं? उन महाराज के प्रति हुई भूल को मैंने खत्म कर दिया। मैं माता जी के दर्शन करने क्यों जाता हूँ? इन सभी महात्माओं को क्यों ले जाता हूँ? पहले जो भूलें की हैं उन भूलों की माफी माँगने के लिए वहाँ ले जाता हूँ। आपको समझ में आया न? अंत में दुनिया के साथ क्या करना पड़ेगा?

प्रश्नकर्ता : सभी भूलों को समाप्त करके भूल रहित होना पड़ेगा।

दादाश्री : तो हम क्या करते हैं?

प्रश्नकर्ता : यही। अब समझ में आया, दादा।

दादाश्री : समझ में आया न? ज्ञानी होकर भी नमस्कार करना, क्या सरल बात है? कहेंगे कि, 'भले ही पहाड़ पर से फेंक दो लेकिन मैं नमस्कार नहीं करूँगा।'

प्रश्नकर्ता : दादा, वह तो जब बोचासण गए थे तब आपने ऐसा बताया था न, 'योगी बापा को नमस्कार करना।'

दादाश्री : हाँ! मैंने सभी से कहा था, 'नमस्कार करना।'

प्रश्नकर्ता : दादा, वह तो ऐसा है कि हम तो सत्रह बार या सौ बार भी नमस्कार कर लेंगे, उसमें कोई परेशानी नहीं है। छोटे बच्चों को भी नमस्कार करने में कोई परेशानी नहीं है लेकिन जब आप करते हैं न, तब भीतर ज़रा यों हो जाता है कि यह क्या है?

दादाश्री : नीरू बहन के मन में ऐसा होता है कि इतने बड़े अपने दादा फिर भी वे दूसरों को नमस्कार करते हैं तो अपनी आबरू चली जाएगी। वह तो चली ही गई है न, अपनी आबरू है ही कहाँ? अपनी आबरू थी ही कब?

प्रश्नकर्ता : नहीं, नहीं। आबरू की बात नहीं है। आबरू तो, अगर पहचानेंगे तब अपनी आबरू जाएगी न! हमें कोई पहचाने वाला तो हैं ही नहीं न।

यात्रा में पैर छूकर हिसाब चुकाया

दादाश्री : हम ये जो सूक्ष्मतर और सूक्ष्मतम दोष बता रहे हैं, उन्हें आप जानते हो न? वे जो हमारे दोष हैं, कहीं-कहीं कुछ बाकी रह गए हैं, वे सामने वाले को नुकसानदेह नहीं हैं, उन्हें हम विलय कर देते हैं।

वर्ना, वे जो यों मुँह खोलकर वे संत बोल रहे थे न, 'दादा भगवान, दादा भगवान!' तब मैंने

कहा, 'मैं तो लघुत्तम हूँ।' तब वे कहने लगे, 'वही गुरुत्तम हैं! लघुत्तम वही गुरुत्तम!'

प्रश्नकर्ता : लेकिन दादा, वे तो आपको पहचान ही नहीं पाए थे।

दादाश्री : पहचानेंगे कैसे? अभी तक तो आप ही पूर्ण रूप से नहीं पहचाने हो! यह देखो, इन्होंने भी अभी तक पूर्ण रूप से नहीं पहचाना है!

प्रश्नकर्ता : हाँ, तो ऐसा कुछ कीजिए कि हम पूर्ण रूप से पहचान जाएँ।

दादाश्री : नहीं पहचान सकोगे! पूर्ण रूप से पहचानने के लिए तो कितनी उच्च प्रकार की दृष्टि चाहिए! पहचान यानी कि यदि एकदम से पहचान जाओगे, अगर ऐसा हो जाएगा तो फिर काम ही क्या बाकी रहा? अभी जितना पहचाने हो उतना तो आपके पास है ही लेकिन अभी तो और भी बहुत पहचानना बाकी है!

प्रश्नकर्ता : एक बाल के बराबर भी नहीं पहचान पाए हैं?

दादाश्री : बहुत पहचान चुके हो, दूसरे लोगों से ज़्यादा पहचान चुके हो लेकिन अभी तो और भी बहुत पहचानना बाकी है।

प्रश्नकर्ता : लेकिन दादा, आपको पूर्ण रूप से पहचान पाना संभव ही नहीं है। आप हर दिन नया-नया ही दिखाते रहते हैं! हम पूरा कैसे पहचान सकते हैं? आज आपने ऐसी नई बात निकाली कि जिस पर हमारा ध्यान ही नहीं जा सकता था।

दादाश्री : मैं नहीं कह रहा था कि हम में सूक्ष्मतर और सूक्ष्मतम भूलें हैं।

प्रश्नकर्ता : हाँ, लेकिन उसका ताल-मेल तो बैठना चाहिए न, कि उस समय कहा था और यह बात...

दादाश्री : नहीं, लेकिन वे सूक्ष्मतर और सूक्ष्मतम क्या हैं, उसके बारे में नहीं सोचा आपने?

प्रश्नकर्ता : सोचा तो... लेकिन ऐसा समझ में नहीं आया था।

दादाश्री : मैंने कितनी बार कहा होगा?

प्रश्नकर्ता : हाँ... पाँच सौ बार, बहुत बार।

दादाश्री : कि भाई, हमारे इतने दोष चले गए हैं और इतने बाकी हैं और वे किसी के लिए नुकसानदेह नहीं हैं। वे ऐसे नहीं हैं कि किसी को पता चलें।

प्रश्नकर्ता : तो फिर हमें कहाँ से पता चलता?

दादाश्री : अब, उन सब दोषों को निकालने के लिए हमें ऐसे घूमना पड़ता है।

प्रश्नकर्ता : इस पॉइन्ट पर इन भाई ने कहा था कि ये सभी सम्मेत शिखर जी जा रहे हैं, वे भाव बीज डालने जा रहे हैं।

दादाश्री : वे तो अपनी समझ के अनुसार कहेंगे। लेकिन कईं लोगों को ऐसा भाव हुआ कि 'नहीं करना है', वही अहंकार है।

प्रश्नकर्ता : भाव हुआ, वही अहंकार!

दादाश्री : जो लोग तैयार नहीं हुए और 'नमस्कार नहीं करना है', ऐसा भाव हुआ तो उसे क्या कहेंगे? उन्हें ऐसा गलत क्यों लगा?

प्रश्नकर्ता : अहंकार है।

दादाश्री : वह अहंकार है। हम तो छोटे बच्चे के भी पैर छू लेते हैं।

प्रश्नकर्ता : नहीं, लेकिन दादा पैर छूने का भाव हुआ और पैर छू लिए तो क्या वह अहंकार नहीं है?

दादाश्री : वह अहंकार छूट गया या अहंकार चिपक गया है, उसका आपको कैसे पता चलेगा?

प्रश्नकर्ता : आपकी बात तो ठीक है लेकिन किसी और के लिए? आप तो छोड़ेंगे ही, बाँधेंगे तो नहीं।

दादाश्री : हम जब खाना खाने बैठते हैं, तब हमारा हिसाब चुकाते हैं। हम यहाँ किसी भी जगह उधारी नहीं करते। इसीलिए पैर छू लेते हैं। पैर छूकर हिसाब चुकाते हैं। हम माउन्ट आबू गए थे, वह भी हिसाब चुकाने गए थे। सभी जगह हिसाब ही चुकाते हैं। अब, यदि आप इतना हिसाब लगा लोगे तो आप भी आगे बढ़ जाओगे।

प्रश्नकर्ता : तब तो ठीक है। जिसके साथ हिसाब हो, आपको उसी के पैर छूने हैं।

दादाश्री : सही-गलत हिसाब बंधे हुए हैं न, वे सभी खत्म करने हैं। वर्ना, भला ज्ञानी किसी के पैर छूते होंगे?

प्रश्नकर्ता : हाँ, वही बात है न!

दादाश्री : दुनिया भर के ज्ञानियों को ढूँढ लाओ, कोई किसी के पैर नहीं छूते हैं।

प्रश्नकर्ता : कोई नहीं छूता। साधु भी साधु के नहीं छूते न!

दादाश्री : साधु भी साधु के नहीं छूते क्योंकि उनमें अहंकार है।

दुनिया भर में सिर्फ यही एक ऐसी मूर्ति है, जिनके दर्शन करने योग्य हैं। यदि समझकर दर्शन कर लें तो कल्याण हो जाएगा! चौदह लोकों के नाथ यहाँ पर प्रकट हुए हैं, इसके अलावा और कहीं नहीं हैं, ऐसा समझकर यदि कोई दर्शन कर जाए तो कल्याण हो जाएगा! लेकिन जिसे समझ में नहीं आया उसका चला जाएगा। जिसे समझ में आ गया, वह कमा लेगा। हमें ऐसा कुछ नहीं है कि आप समझो ही। और ऐसा भी नहीं है कि नहीं समझो। समझो और कमाओ। हम क्या कहते हैं?

प्रश्नकर्ता : समझो और कमाओ।

दादाश्री : यह तो आश्चर्य है, दुनिया का ग्यारहवाँ आश्चर्य है! दूसरों के पैर छूते हैं न, वह आश्चर्य नहीं कहा जाएगा?

हमारे प्रतिक्रमण, दोष होने से पहले ही

प्रश्नकर्ता : मुझे तो आपकी एक बात पसंद आ गई, आपने कहा था कि, 'हमारे प्रतिक्रमण दोष होने से पहले ही हो जाते हैं।'

दादाश्री : हाँ, ये प्रतिक्रमण 'शूट ऑन साइट' (तुरंत) हो जाते हैं। दोष होने से पहले अपने आप ही शुरू हो जाते हैं। हमें पता भी नहीं चलता कि कहाँ से आ गया! क्योंकि वह जागृति का फल है। संपूर्ण जागृति, उसी को 'केवलज्ञान' कहते हैं। और क्या? जागृति ही मुख्य चीज़ है।

हम ने अभी इन संघपति का अतिक्रमण किया, उनके लिए हमारा प्रतिक्रमण भी हो गया। हमारा प्रतिक्रमण साथ-साथ ही हो जाता है। बोलते भी जाते हैं और प्रतिक्रमण भी करते जाते हैं। यदि कुछ कहेंगे नहीं तो गाड़ी नहीं चलेगी।

प्रश्नकर्ता : दादा, कई बार हम से भी ऐसा होता है, कि बोल रहे होते हैं और प्रतिक्रमण भी होता जाता है लेकिन जिस तरह से आप करते हैं और हम करते हैं, उसमें हमें फर्क लगता है।

दादाश्री : आपके और हमारे करने में कितना फर्क है? सफेद बाल और बिल्कुल मुलायम काले बाल!

प्रश्नकर्ता : आप बताइए कि आप प्रतिक्रमण किस तरह से करते हैं?

दादाश्री : अरे! उसका तरीका पता नहीं चलेगा! ज्ञान हो जाने के बाद, बुद्धि के चले जाने के बाद वैसा हो पाएगा। तब तक वह तरीका खोजना भी मत। आपको अपने आप आगे बढ़ना है। जितना बढ़ सको उतना ठीक है।

प्रश्नकर्ता : हमें खोजना नहीं है, सिर्फ जानना ही है, दादा।

दादाश्री : नहीं। लेकिन उस तरीके का पता ही नहीं चलेगा। जहाँ साफ हो चुका है, 'क्लियर' ही है, वहाँ करने को रहा ही क्या? एक तरफ भूल होती है और दूसरी तरफ धुलती जाती है। जहाँ अन्य कोई दखल ही नहीं है। ऐसा सब 'अन्क्लियर', सभी जगह मिट्टी के ढेर पड़े हों व पत्थर पड़े हों, ऐसा तो चलेगा ही नहीं न! फिर भी यदि रास्ते पर धूल दिखने लगे तो आप समझ जाना कि अब पहुँचने वाले हैं। आपको खुद की भूल दिखाई देती है, फिर हर्ज ही क्या है?

प्रश्नकर्ता : नहीं, यह तो समझने के लिए पूछा।

दादाश्री : जब तक खुद की भूलें दिखाई देती हैं, तब तक समझना कि सब ठीक चल रहा है।

जब भादरण वाले आते हैं, तब मैं कहता हूँ कि 'तेरे चाचा तो ऐसे थे'।

प्रश्नकर्ता : आपकी बात अलग है।

दादाश्री : नहीं! उसके लिए भी, हमारा चाहे कितना भी अलग रहे फिर भी हमें उनके प्रतिक्रमण करने पड़ते हैं। एक अक्षर भी नहीं छोड़ सकते क्योंकि वे भगवान हैं। आप क्या कहते हो? निंदा करना बंद कर देना चाहिए?

प्रश्नकर्ता : यदि जागृति रहेगी तो निंदा नहीं करेगा।

दादाश्री : जागृति रहती है, खुद यों जागृत रहता है और एक तरफ ऐसा बोल लेता है, खुद को ऐसा पता भी चलता है कि यह गलत बोल रहा हूँ, ऐसा भी जानता है।

प्रश्नकर्ता : वह तो ज्ञानी पुरुष की बात हुई।

दादाश्री : नहीं, आपको भी वैसा रहता है न!

प्रश्नकर्ता : ऐसा होता है कि जागृति रहती है, फिर भी जब निंदा या वैसा कुछ भी करते हैं, तब दोनों साथ में चलता रहता है और उस वक्त उसका प्रतिक्रमण हो जाता है।

'केवलदर्शन' दिखाए भूलें

दादाश्री : यह उसकी रिसर्च दी है। आगे के लिए चाहिए न? आप मेरी वाणी की जितनी रिसर्च करते हो, उससे कहीं ज़्यादा मैं करता हूँ क्योंकि मेरी जागृति संपूर्ण है। मेरी जागृति इसी में रहती है न! यह टेपरिकार्ड कहाँ-कहाँ भूल वाली है, उतना हमें देखना पड़ता है। ज्ञान में भूल नहीं है। ज्ञान में एक्यूरेट! व्यवहार में ज़रा भूल हो जाती है। व्यवहार की बातों में शायद हमारी भूल हो जाती है। यदि सांसारिक व व्यवहारिक बातों के बारे में कुछ पूछा जाए तो उसमें जो भूल होती है, उसका हमें पता चल जाता है लेकिन इसमें, आत्मा की बातों में भूल नहीं होती। वास्तव में हमारी भूल नहीं होती।

हमारा ज्ञान अविरोधाभासी है और वाणी संपूर्ण रूप से स्याद्वाद नहीं है। कभी कोई उसकी लपेट में आ जाता है जबकि तीर्थंकरों की वाणी में कोई लपेट में नहीं आता। वह तो संपूर्ण रूप से स्याद्वाद! वे लपेट में लिए बगैर बोलते हैं। बातें तो वे भी यही करते हैं लेकिन लपेट में लिए बगैर।

प्रश्नकर्ता : आपके इस स्याद्वाद को क्या इसलिए संपूर्ण नहीं कहा है क्योंकि इसमें कोई लपेट में आ जाता है लेकिन दर्शन तो संपूर्ण हैं न, या स्याद्वाद में भूल हो गई?

दादाश्री : हाँ। दर्शन तो संपूर्ण है, दर्शन में कोई कमी नहीं है। ज्ञान भी है लेकिन ज्ञान में चार डिग्री कम हैं इसलिए यह वाणी संपूर्ण रूप से स्याद्वाद नहीं है। हमारे दर्शन में सबकुछ तुरंत ही आ जाता है। तुरंत, भूल का पता चल जाता है। सूक्ष्म से सूक्ष्म भूल का भी तुरंत पता चल जाता है। वैसी भूलों को देखने में अभी तो आपको बहुत टाइम लगेगा। आप तो स्थूल भूलें देखते हो। बड़ी-बड़ी, जो दिखाई देती हैं, वैसी भूलें ही देखते हो। इसलिए हम कहते हैं न, कि हम से दोष होने के बावजूद भी किसी को हमारा दोष दिखाई नहीं देता। हमें खुद को ही दिखाई देता है।

प्रश्नकर्ता : स्याद्वाद में भूल हो गई इस तरह के सभी दोष दिखाई देते हैं?

दादाश्री : स्याद्वाद और अनेकांत में भूल हो गई, ऐसे सारे दोष दिखाई देते हैं। अब, हमारा स्याद्वाद पूर्ण हो रहा है। जब पूर्ण स्याद्वाद आ जाएगा तब केवलज्ञान पूर्ण हो जाएगा। दर्शन है, इसीलिए तो पता चलता है कि 'यह भूल है'। 'फुल' (पूर्ण) दर्शन है इसलिए सभी से कहा है न, कि आपको 'केवलदर्शन' देता हूँ।

हमें प्रतिक्रमण करने पड़ते हैं क्योंकि हमारे मुँह से (वाणी) निकलती रहती है। देखो न, इतना अनिवार्य है! कभी-कभी आचार्य के बारे में बोल देते हैं! बाकी, किसी के भी बारे में बोलना नहीं चाहिए। ऐसा जानते हैं कि 'इस दुनिया में सभी निर्दोष हैं' लेकिन क्या किसी के बारे में बोलना चाहिए?

प्रश्नकर्ता : नहीं बोलना चाहिए।

दादाश्री : वह जो वाणी निकलती है न, उसके बाद तुरंत ही हमारे प्रतिक्रमण चलते रहते हैं। अरे! देखो न, कैसी दुनिया है!

जो वाणी बोलते हैं, उसी के लिए अभिप्राय अलग है। यह संसार कैसा है! वह जो वाणी बोलते हैं, उस पर कैसा अभिप्राय है कि 'ऐसा नहीं है। यह गलत है। ऐसा नहीं होना चाहिए।' लेकिन जिस तरह यह दुनिया चल रही है, उसके साथ जागृति में रहकर ही चलते हैं।

बोलते जाते हैं और साथ में ऐसी जागृति भी रहती है कि 'ऐसा नहीं होना चाहिए'। क्योंकि हम ने पूरे संसार को निर्दोष देखा है। सिर्फ, वर्तन में नहीं आया है। वर्तन में क्यों नहीं आया? तो यह जो वाणी है, वह दखल करती है।

दादा कभी भूल नहीं निकालते

सूक्ष्म से सूक्ष्म दोष भी हमारी दृष्टि से बाहर नहीं रहते। सूक्ष्म से सूक्ष्म, अति-अति सूक्ष्म दोषों का हमें तुरंत ही पता चल जाता है! आपको किसी को पता नहीं चलेगा कि मुझ से यह दोष हो गया है क्योंकि वे दोष स्थूल नहीं हैं।

प्रश्नकर्ता : आपको हमारे भी दोष दिखाई देते हैं क्या?

दादाश्री : सभी दोष दिखाई देते हैं, लेकिन हमारी दृष्टि उन दोषों की ओर नहीं होती। हमें, तुरंत ही उसका पता चल जाता है लेकिन हमारी दृष्टि तो आपके शुद्धात्मा की ओर ही होती है। हमारी दृष्टि आपके उदयकर्म की ओर नहीं होती। सभी के दोषों का हमें पता चल जाता है। दोष दिखाई देते हैं फिर भी हम पर उसका असर नहीं होता। कवि ने कहा है न, 'मा कदी खोड काढे नहीं. दादानेय दोष कोईना देखाय नहीं!' ('माँ कभी भूल नहीं निकालती। दादा को भी किसी के दोष नहीं दिखाई देते!')

खुद के दोष तो सुप्रीम कोर्ट वाला भी नहीं देख पाएगा, वहाँ तक तो जजमेन्ट भी नहीं पहुँच पाएगा। वहाँ तो खुद का इतना सा भी दोष नहीं देख सकेगा। ये तो गाड़ियाँ भर-भर के दोष निकलते रहते हैं। ये तो स्थूल, आवरण ज़्यादा हैं इसलिए दोष दिखाई नहीं देता। जबकि यहाँ तो इतना, ज़रा सा भी बाल जितना भी दोष होता है न, तो तुरंत पता चल जाता है कि यह दोष हुआ। यानी भीतर कैसी कोर्ट होगी ? वह जजमेन्ट कैसा ? फिर भी किसी से मतभेद नहीं। गुनहगार से भी मतभेद नहीं। गुनहगार दिखाई ज़रूर देता है, फिर भी मतभेद नहीं क्योंकि वास्तव में वह गुनहगार है ही नहीं। वह तो 'फॉरेन' में गुनहगार है जबकि हमें तो 'होम' से लेना-देना है। इसलिए हमें मतभेद रहता ही नहीं है!

हम समझते हैं कि इतनी निर्बलता रहेगी ही इसलिए हमारी सहज क्षमा रहती है। हमें किसी को डाँटना नहीं पड़ता। यदि हमें ऐसा लगे कि किसी से बहुत बड़ा दोष हो जाएगा तो हम उसे बुलाकर दो शब्द कहते हैं। ऐसा लगे कि यहाँ से फिसल जाएगा, वह 'स्लिप' हो जाएगा, ऐसा हो, तभी कहते हैं। हम जानते हैं कि आज नहीं जागेगा तो कल जागेगा क्योंकि यह जागृति का मार्ग है! निरंतर 'अलर्टनेस' (जागृति) का मार्ग है, यह!

जगत् कल्याण करने का राग

इस काल में संपूर्ण वीतराग नहीं हैं। हम वीतराग हैं लेकिन संपूर्ण नहीं हैं। हम संसार के तमाम जीवों के साथ वीतराग हैं, सिर्फ हमारे जगत् कल्याण करने के कर्म के प्रति ही हमें राग रहता है। जगत् कल्याण करने की खटपट के लिए हमें थोड़ा राग रह गया है। वह राग भी कर्म खपाने जितना ही है। वर्ना 'हमें' तो हमारा मोक्ष निरंतर बरतता ही रहता है।

अत: जब हम नीरू बहन से कुछ कहते हैं, तब हमारा राजीपा (कृपा दृष्टि) चला नहीं जाता। दूसरों को ज़रा उल्टा समझ में आता है क्योंकि उनकी देखने की दृष्टि ठीक नहीं है न!

ऐसा है, जब हम दूसरों को डाँटते हैं न, तब हम उनके साथ खुशी से बात करते हैं लेकिन फिर अदंर से भाव कुछ कम हो जाता है। उसे यों लगता है कि दादा तो मुझ से खुश हैं! कितने समभावी हैं। नीरू बहन, आप पर समभाव नहीं रखते। यदि समभाव रखेंगे तो फिर ऐसा कहा जाएगा कि आप पर राजीपा कम हो गया।

प्रश्नकर्ता : वह तो समझ में आता है, दादा।

दादाश्री : दूसरों के प्रति पूर्ण रूप से वीतराग रहते हैं और नीरू बहन, आपके प्रति पूर्ण रूप से वीतराग नहीं हैं। दूसरों के प्रति वीतराग हैं इसलिए फिर वहाँ उनके लिए हमारा प्रेम कम हो गया और वीतराग होते गए। और आपको डाँटते हैं, यानी कि यहाँ हमारा प्रेम है। आप के प्रति वीतराग नहीं हुए हैं। हम, आप के प्रति वीतराग नहीं हुए, बस। आपको समझ में आया न ?

प्रश्नकर्ता : हाँ।

दादाश्री : फिर आगे बढ़ते हैं। यदि अभी यह समझ में नहीं आ रहा तो बाद में समझ में आ जाएगा।

जिन्हें कुछ भी नहीं चाहिए, जिन्हें बेकार की कोई झंझट ही नहीं है, वे वीतराग ही है! रात-दिन लोगों का कल्याण करने की भावना! खुद के शरीर की कोई चिंता नहीं। अपने महात्माओं का किस तरह से अच्छा हो, वे कैसे आगे बढ़ें, ऐसा ध्यान रहता है न!

पूर्ण हो जाने के बाद फिर कोई पुरुषार्थ नहीं रहता, फिर बिल्कुल सहज भाव। जबकि पुरुषार्थ क्या है ? ज्ञान है फिर भी असहज!

प्रश्नकर्ता : ज्ञान होने के बावजूद भी असहज?

दादाश्री : असहज।

प्रश्नकर्ता : ज्ञानी पुरुष को उससे कर्मबंधन होता है क्या? उस कर्मबंधन को भुगतना पड़ता है?

दादाश्री : हाँ! सामने वाले के कल्याण के लिए। उसका फल तो आएगा ही न, लेकिन उसका फल बहुत उच्च प्रकार का आएगा। वह फल ऐसा होगा जो ज्ञानावरण को हटा देगा। थोड़ा-बहुत जो चार डिग्रियों की कमी रह गई है, पहले वह दो डिग्रियों को हटा देगा, फिर एक डिग्री हटाएगा। अर्थात् यह सब जो ज्ञान देते हैं, वह तो पुरुषार्थ है। वह प्रकृति नहीं है, वह पुरुषार्थ है। अत: अधिकतर तो हमारा पुरुषार्थ ही रहता है।

समझ में आता है कि 'हम' कहाँ पर हैं

हमें वे सूक्ष्मतम व सूक्ष्मतर दोष दिखे बगैर रहते ही नहीं। अगर देखने जाओ तो बाहर क्या कहेंगे कि ये भी कोई दोष है? इन्हें दोष कैसे कह सकते हैं? भोजन करते समय दोष दिखाई देते हैं न, कि यह दोष हुआ, यह दोष हुआ! दोष पुद्गल के हैं लेकिन मूल मालिक तो हम हैं, ज़िम्मेदार तो हम ही हैं न! पहले टाइटल तो हमारा ही था न, अभी टाइटल लौटा दिया है लेकिन क्या वे वकील छोड़ेंगे? नियम ढूँढ निकालेंगे न?

प्रश्नकर्ता : आप कहते हैं कि 'मालिकीपना छूट गया है' तो फिर ये दोष अपने कैसे कहलाएँगे? पुद्गल के दोषों से हमें क्या लेना-देना?

दादाश्री : अपने नहीं कहलाएँगे, लेकिन ज़िम्मेदार तो हो ही।

प्रश्नकर्ता : वह तो आपकी बात है।

दादाश्री : हमें वे दोष दिखाई देते हैं, हमें समझ में आता है न! अरे! भगवान में कितनी शक्ति उत्पन्न हो गई है कि अभी भी उन्हें हम में दोष दिखाई देते हैं! फिर, वे हमें सही भी लगते हैं। मुझे वह समझ में आता है कि 'हम' कहाँ हैं, 'वे' कहाँ हैं। और तो क्या परेशानी है? ऐसा नहीं है कि ऐसे कोई संसारी दोष हुए हों।

प्रश्नकर्ता : वे दोष क्या बहुत सूक्ष्म होते हैं?

दादाश्री : सूक्ष्मातिसूक्ष्म। ऐसे, जिन्हें सूक्ष्मतम कहा जाता है। अत: मुझे यों समझ में आ जाता है न, कि ओहो हो! ये ज्ञानी कहाँ पर हैं और ये भगवान कहाँ पर! नहीं आएगा समझ में?

प्रश्नकर्ता : समझ में आएगा।

दादाश्री : इसीलिए मैं कहता हूँ न, वह यों करके, 'दादा भगवान ना असीम जय जयकार हो!'

अब, सचमुच के भगवान ढूँढ लिए। मैंने आपको दिखाए। अभी तो पूरे वर्ल्ड को यह दिखाऊँगा कि सचमुच के भगवान दुनिया में हैं या नहीं। लोगों को तो यह विश्वास ही नहीं है कि भगवान हैं या नहीं, आत्मा है या नहीं लेकिन जिन्हें विश्वास नहीं, उन्हें दिखाई दिए! आत्मा है, ऐसा विश्वास तो आ गया लोगों को।

हम भगवान नहीं हैं

यह संसार क्या है? डेवेलपमेन्ट का प्रवाह है एक प्रकार का। अर्थात् वह प्रवाह उस तरह से चलता रहता है। उसमें शून्यता से लेकर डेवेलपमेन्ट बढ़ता ही जाता है। वह कैसा डेवेलपमेन्ट होता है? तो वह यह है कि आत्मा तो मूल जगह पर ही है लेकिन यह व्यवहार आत्मा इतना अधिक डेवेलप होता जाता है कि महावीर भगवान बन गए। वह पुद्गल भगवान बन गया। क्या ऐसा स्वीकार होता है कि पुद्गल भगवान बन गया?

प्रश्नकर्ता : हाँ बना ही है न! बनता ही है न! देख सकते हैं।

दादाश्री : हमारा पुद्गल ऐसा नहीं हैं कि पूर्ण रूप से भगवान पद दिखाए। अत: हम मना करते हैं कि 'हम भगवान नहीं हैं।' इसका क्या अर्थ है कि यह पूर्ण पद नहीं दिखाता? 'आइए चंदूभाई', इन्हें इस तरह से बुलाते हैं, तो वह सब क्या है? क्या ये भगवान के लक्षण हैं? और दूसरा, कई बार हम भारी शब्द भी बोल देते हैं। हमें खुद को भी समझ में आता है कि यह भूल हो रही है। ऐसा पूरी तरह से समझ में आता है, एक बाल जितना भी कुछ ऐसा नहीं निकल जाता कि जब हमें हमारी भूल न दिखाई दें। भूल होती है लेकिन तुरंत ही पता चल जाता है। वह डेवेलपमेन्ट की कमी है, भगवान बनने में। अत: हम मना करते हैं। भगवान बनना अर्थात् सारे आचार-विचार, सभी क्रियाएँ भगवान जैसी ही लगें। तब क्या होता है? आत्मा तो आत्मा ही है, शरीर भगवान बना है, उसी को डेवेलपमेन्ट कहते हैं। आप अभी इतने डेवेलपमेन्ट तक पहुँचे हो, अब इतना डेवेलपमेन्ट बाकी रहा कि देह भी भगवान बन जाए। वह वैसा बनता ही जा रहा है, लोगों का (सभी महात्माओं का) ऐसा ही हो रहा है। अगर संयोग उल्टे मिलें तो उनमें से कितने ही नीचे भी चले जाते हैं! हम रोज़ हमारा देख लेते हैं कि एक अक्षर भी किसी के प्रति विरोध न हो हमारा। किसी के साथ बिल्कुल भी मेल न खाए चाहे वह उल्टा बोले तब भी उसके प्रति विरोध नहीं रहता।

भीतर से भगवान दिखाते हैं दोष

मेरी जो सूक्ष्मतर और सूक्ष्मतम भूलें हैं, वे केवलज्ञान को रोकती हैं, ऐसी भूलें जो केवलज्ञान को रोकती हैं, 'भगवान' 'मुझे' वे भूल दिखाते हैं। तब 'मैं' समझ जाता हूँ न, कि 'ये मेरे ऊपरी हैं।' ऐसा पता नहीं चलता? जो हमें अपनी भूलें दिखाएँ, वे भगवान ऊपरी हैं या नहीं?

प्रश्नकर्ता : हाँ, ठीक है।

दादाश्री : इसलिए हम कहते हैं न कि ये जो हमें भूल दिखाते हैं, वे चौदह लोकों के नाथ हैं। उन चौदह लोकों के नाथ के दर्शन करो। भूल दिखाने वाले कौन हैं? चौदह लोकों के नाथ!

उन 'दादा भगवान' को मैंने देखा है, संपूर्ण दशा में है अंदर! उसकी मैं गारन्टी देता हूँ। मैं ही उन्हें भजता हूँ न! और आपको भी कहता हूँ कि, 'भाई, आप दर्शन कर जाओ। 'दादा भगवान' तीन सौ साठ डिग्री और मेरी तीन सौ छप्पन डिग्री हैं इसीलिए यह प्रमाणित हो गया या नहीं कि हम दोनों अलग हैं?

प्रश्नकर्ता : हाँ, ऐसा ही है न!

दादाश्री : हम दोनों अलग हैं। जो भीतर प्रकट हुए हैं, वे दादा भगवान हैं। वे संपूर्ण रूप से प्रकट हो गए हैं, परम ज्योति स्वरूप!

356 और 360 डिग्री में अंतर

प्रश्नकर्ता : अब, दादा जो बताते हैं तीन सौ छप्पन डिग्री, उसमें और तीन सौ साठ डिग्री में क्या अंतर है, वह समझाइए।

दादाश्री : हमारा, अंश केवलज्ञान है और भगवान का सर्वांश केवलज्ञान है।

प्रश्नकर्ता : अंश केवलज्ञान और संपूर्ण केवलज्ञान में क्या अंतर है, वह समझाए ज़रा।

दादाश्री : तीर्थंकरों को केवलज्ञान के सभी अंशों से केवलज्ञान हो चुका होता है और ज्ञानियों को कुछ अंश तक का, उनके कुछ अंश बाकी हैं।

360 डिग्री पर संपूर्ण निर्दोष दृष्टि

प्रश्नकर्ता : तीर्थंकरों की तीन सौ साठ

डिग्री हैं और आपकी तीन सौ छप्पन, इनमें भेद समझाइए।

दादाश्री : तीन सौ साठ वाले ऐसा नहीं कहते कि 'चलो आपको मोक्ष दूँ'। और देखो, मैं तो खटपट करता हूँ न! 'चलो मोक्ष देता हूँ'। ओहोहो! आए बड़े मोक्ष देने वाले! जब संडास नहीं आती तब जुलाब लेना पड़ता है! आए बड़े मोक्ष देने वाले! यह तो ऐसा है न कि जो ऐसा कुछ भी नहीं कहते, वे वीतराग हैं और हम खटपटिया वीतराग हैं। यह जो खटपट करते हैं, वह किसलिए? क्या पेट में दु:ख रहा है कि खटपट कर रहे हो?

प्रश्नकर्ता : दूसरों के लिए।

दादाश्री : मन में ऐसा भाव है कि 'जैसा सुख मैंने प्राप्त किया वैसा सभी प्राप्त करें।' अन्य कुछ भी नहीं चाहिए, दुनिया की कोई चीज़ नहीं चाहिए लेकिन यह भी भाव ही है न! जब तक भाव है तब तक उतनी डिग्री कम है। जब तक कोई भी भाव है तब तक संपूर्ण वीतराग नहीं हैं। अत: हमारी चार डिग्री कम हैं जबकि तीर्थंकर तो कुछ भी नहीं कहते। बिल्कुल उल्टा हो रहा हो और वे देखते हैं कि यह उल्टा हो रहा है तब भी नहीं बोलते। एक अक्षर भी नहीं बोलते, वीतराग! आप लोगों के काम आते हैं ये खटपटिया!

प्रश्नकर्ता : दादा, सत्तावन, अठावन और उनसठ का क्या है फिर?

दादाश्री : वह तो फिर डिग्री बढ़ती जाती है न, वह दशा और भी उच्च प्रकार की होती है! वह दशा बहुत उच्च है।

प्रश्नकर्ता : हमें ज़रा समझ में आए ऐसा कुछ बताइए न?

दादाश्री : जैसै-जैसे वह स्थिति आएगी न, तब समझ में आ जाएगा।

प्रश्नकर्ता : तीन सौ साठ वाले को यह जगत् कैसा दिखाई देता है?

दादाश्री : कोई जीव दु:खी नहीं है, कोई जीव सुखी नहीं है, कोई दोषित नहीं है। सबकुछ रेग्यूलर ही है। सब जीव निर्दोष ही दिखाई देते हैं, हमें भी निर्दोष दिखाई देते हैं लेकिन हमें श्रद्धा में निर्दोष दिखाई देते हैं, श्रद्धा में और ज्ञान में, चारित्र में नहीं है इसीलिए हम कहते हैं न कि 'तूने यह गलत किया, इसका यह अच्छा है'। जब तक अच्छा-बुरा कहते हैं तब तक वर्तन में निर्दोष नहीं दिखाई देते! अभी तक यह वर्तन में नहीं आया है। जब यह वर्तन में आएगा तब हमारी तीन सौ साठ डिग्री पूरी हो जाएँगी। हमारे मन में कुछ भी नहीं है, राग-द्वेष ज़रा से भी नहीं हैं। शब्दों में कहते हैं।

तीर्थंकरों में होती है संपूर्ण शुद्धता

हम शुक्लध्यान के द्वितीय चरण में हैं और आपको प्रथम चरण में बैठा दिया है इसलिए कवि लिखते हैं कि दादा विशुद्ध हृदयी है।

प्रश्नकर्ता : दादा का आत्मा कम्प्लीट्ली विशुद्ध ही हो गया है। अब दादा का आत्मा जितना विशुद्ध है, उतना ही सीमंधर स्वामी का भी है न? उनमें और आप में क्या अंतर है?

दादाश्री : उनका एकदम साफ, बिल्कुल प्योर! अंतर तो, वह जो हमारी चार डिग्री कम हैं न, उसी से सारे आवरण हैं। उसी की वजह से यह झपकी लगती है न! हम यों सत्संग के लिए कहते हैं, अभी बातें कर रहे हैं, वह गलत नहीं है लेकिन इन दूसरी व्यवहारिक बातों में यह जो हमारा आधा घंटा चला जाता है, कि फलियाँ क्यों ले आए और फलाना क्यों ले आए और आपको यह क्यों नहीं खाना चाहिए, ऐसी सभी बातें, वे अब चारित्र मोह हैं वही आवरण हैं। ऐसा उनमें नहीं है।

प्रश्नकर्ता : उनका कम्प्लीट्ली क्लियर है!

दादाश्री : उनका कम्प्लीट्ली क्लियर है, बहुत ही क्लियर! इतना क्लियर है कि सारा संसार आफरीन हो जाए! तभी तो ऐसी वाणी निकलती है। भीतर जितना क्लियरन्स, वाणी उतनी ही क्लियर। बस, यही नियम है।

चार डिग्री की कमी के कारण समझ में तो आता है लेकिन दिखाई नहीं देता

प्रश्नकर्ता : आप में जो चार डिग्री कम हैं, तो वह किस बारे में है?

दादाश्री : हाँ। वह इस दुनियादारी को लेकर नहीं है। वह आप सभी के लिए नुकसानदेह नहीं है लेकिन हमें जो आगे का जानना है, जो सूक्ष्मतम वाला कुछ भाग जानना बाकी है, उसके आधार पर संपूर्ण एब्सल्यूट ज्ञान नहीं कह सकते। एब्सल्यूट में ज़रा कमी है। एब्सल्यूट है तो सही, निरालंब तो रह सकते हैं लेकिन और जो जगत् के बारे में जानना चाहिए, वह समझ में तो आता है लेकिन जान नहीं पाते। वर्ना, सारा वर्णन कर पाता। भगवान महावीर ने जो वर्णन किया है, वह सारा वर्णन मैं कर पाता। अभी तो मुझे भगवान महावीर का बताया हुआ वर्णन देना पड़ता है। जब आप कुछ पूछते हो, जवाब में भगवान महावीर का कहा हुआ ही कहना पड़ता है। हाँ, कितना ही मेरा है लेकिन कुछ उनका होता है।

अत: वह जो चार डिग्रियों की कमी हैं। वे चार डिग्री ऐसी हैं कि संसार को किसी भी तरह से नुकसान नहीं पहुँचाती। लेकिन वह जो चार डिग्री की कमी हैं, वह अंतिम आवरण है, सूक्ष्मतम आवरण है। उसका हटना बाकी है। जिसके आधार पर यहाँ से सारी चीज़ें दिखाई देनी चाहिए। वे मुझे समझ में तो आती हैं लेकिन दिखाई नहीं देतीं।

यह सारा संसार जो मुझे केवलज्ञान में दिखाई देना चाहिए, वह दिखाई नहीं देता। अभी थोड़ी देर के बाद क्या होगा, वह मुझे दिखाई नहीं देता। मैं बस से जाऊँगा या किसी और तरह से, मुझे वह भी नहीं दिखाई देता। जबकि केवलज्ञान में तो सबकुछ दिखाई देता है कि 'मैं यहाँ से बस द्वारा जाऊँगा, बीच रास्ते में बस टकरा जाएगी,' वह भी दिखाई देता है। लेकिन उन्हें खेद नहीं होता। फिर भले ही वे समुद्र में डूब जाएँ, तब भी उन्हें खेद नहीं होता। अत: उन्हें केवलज्ञान में जो सारा संसार दिखाई देता है, वह हमें नहीं दिखाई देता और उसके लिए हम जल्दबाज़ी भी नहीं करते।

अहंकार की भूल की वजह से हुए केवलज्ञान में फेल

प्रश्नकर्ता : आपने बताया कि ज्ञानी पुरुष का केवलज्ञान चार डिग्रियों से रुका हुआ है। वह आत्मज्ञान से ऊपर चला गया है और केवलज्ञान के स्टेशन तक नहीं पहुँचा। अब, दादा की दशा क्या आत्मज्ञान से आगे और केवलज्ञान से पहले की है? क्या वह दोनों के बीच की है?

दादाश्री : हाँ। बीच की दशा है।

प्रश्नकर्ता : वह कौन सी दशा कहलाएगी?

दादाश्री : न तो आचार्य हैं, न ही तीर्थंकर और न ही अरिहंत।

प्रश्नकर्ता : न तो अरिहंत, न ही आचार्य लेकिन वह कोई पद तो होगा न? उस दशा के लिए क्या कोई पद नहीं है?

दादाश्री : उसे कोई पद ही नहीं दिया है न! पाँच ही पद रखे गए हैं। केवलज्ञान में फेल को किसमें रखेंगे? परीक्षा में जो पास हो जाते हैं उन्हें अरिहंत में रखते हैं और जो फेल हो गए, उन्हें किस में रखेंगे?

प्रश्नकर्ता : तो फिर वे आचार्य में नहीं आते हैं? बीच में ही रहते हैं?

दादाश्री : नहीं, आचार्य में कैसे आ सकते हैं।

प्रश्नकर्ता : दादा, यह तो त्रिशंकु जैसी स्थिति हो गई।

दादाश्री : नहीं! त्रिशंकु का इसमें कोई लेना-देना नहीं है। ये खुद ही भगवान हैं लेकिन फेल हो चुके भगवान हैं, बस, इतना ही है।

अभी तो मैं चार डिग्रियों से फेल हो गया हूँ इसलिए आपके और इन सभी लोगों के काम आ गया। यदि फेल नहीं हुआ होता और पास हो जाता तो मोक्ष में चला जाता।

प्रश्नकर्ता : फिर फेल क्यों हुए?

दादाश्री : कोई भूल हो गई होगी इसीलिए न! भूल के बिना तो फेल कर ही नहीं सकते न!

प्रश्नकर्ता : कैसी भूल हुई होगी किस प्रकार की भूल?

दादाश्री : अहंकार की कुछ भूल हुई होगी। भीतर 'मैं पना' आ गया होगा। 'मैं ही हूँ', 'मैं हूँ', 'मैं हूँ।' उस भूल की वजह से फेल हो गए। अब, उस अहंकार को निकालना पड़ेगा, वह सारा निकाल दिया। अब साफ कर दिया।

प्रश्नकर्ता : तो अब तो केवलज्ञान हो जाना चाहिए न?

दादाश्री : अब, साफ हो गया है लेकिन अभी (केवलज्ञान) नहीं हो सकता। अभी वैसा काल ही नहीं है न, उन दिनों था। पच्चीस सौ वर्ष पहले वैसा काल था। अभी वैसा काल नहीं है। मुझे जल्दी भी नहीं है। मैं तो निरंतर मोक्ष में ही रहता हूँ।

चार अंश की कमी है चारित्रमोह के कारण

प्रश्नकर्ता : तो आपको केवलज्ञान प्राप्त करने में चार ही अंश कम हैं?

दादाश्री : वे क्या आपको दिखाई नहीं देते थोड़े-बहुत?

प्रश्नकर्ता : नहीं दिखाई देते। हमें तो दादा पूर्ण ही दिखाई देते हैं।

दादाश्री : ये जो बाल बनाए हैं, यह सब नहीं किया इन्होंने? क्यों बनाए बाल? कोई पूछेगा, 'बाल बनाने के लिए तेल कहाँ से लाते हैं? ये बाल किससे कटवाते हैं? यह अंगूठी कहाँ से लाए हैं? चोरी करके लाए हैं?'

यह जो चारित्रमोह आपको दिखाई देता है, भले ही मुझे इनके प्रति मूर्च्छा नहीं है, फिर भी सामने वाले को दिखाई देता है इसलिए उतने अंश माइनस हो जाते हैं और उस कारण मुझ में चार डिग्रियों की कमी हैं। स्वार्थ के बगैर नहीं है, मैं अपने स्वार्थ के लिए ही बता रहा हूँ।

हमारी चार डिग्री इम्प्योर हैं। ज्ञान में बहुत ज़्यादा इम्प्योरिटी नहीं है, वर्तन में इम्प्योरिटी है। कपड़े, कोट-बूट वगैरह जो पहनते हैं न, वह सब वर्तन कहलाता है। उन्हें तो इसका भी ध्यान नहीं रहता, कोट-बूट किसी का भी। यदि पहनाने वाला मिल जाए तो पहन लेते हैं और नहीं मिले तो वैसे के वैसे ही! जबकि यहाँ तो यदि कोई पहनाने वाला नहीं मिले तो मैं अपने आप ही बूट ढूँढकर पहन लेता हूँ। मैं यों ही बाहर नहीं निकलता, इतना अंतर है। जबकि उन्हें यदि पहनाने वाला नहीं मिले तो, 'ऐसे ही' और यदि पहनाने वाला मिले तो, 'वैसे ही।'

तप बाकी है, इसलिए रुका हुआ है केवलज्ञान

प्रश्नकर्ता : अतः इन चार डिग्रियों की वजह से यह दिखाई देता है?

दादाश्री : यह तो दिखाई देता है। देखा जाए तो बाकी सब दोष ऐसे हैं जो केवलज्ञान को रोकते हैं। वे ऐसे नहीं हैं कि लोगों को नुकसान पहुँचाएँ। अभी भी दिन में हमारी सौ-सौ भूलें होती हैं। वे ऐसी भूले हैं जो आप लोगों को नहीं दिखाई देतीं लेकिन केवलज्ञान को रोकती हैं। हमें तो काम से काम है न? हमें तो मोक्ष में जाना है। तब यदि कोई पूछे कि 'आपको ऐसे ही रखना है?' तब कहते हैं कि 'नहीं, ऐसा भी नहीं रखना है और जल्दबाज़ी भी नहीं है।' ऐसा भी नहीं है कि हमें किसी प्रकार की जल्दी है। वीतरागता में जल्दबाज़ी होती ही नहीं न?

केवलज्ञान में हमारी चार डिग्री कम हैं, वह 'कुछ भाग' नहीं होने की वजह से हमारा यह ज्ञान रुका हुआ है। उस तप के बगैर ज्ञान रुका हुआ है। तप पूर्ण होने के बाद केवलज्ञान प्रकट होता है। वर्ना, प्रकट नहीं होता।

नहीं चाहिए किसी की परतंत्रता

प्रश्नकर्ता : आपकी चार डिग्री कम होने का क्या कारण है?

दादाश्री : इस काल की वजह से वह पूर्ण नहीं हुआ। वर्ना, केवलज्ञान तो हमारे हाथ में ही था लेकिन इस काल की वजह से पचा नहीं।

ज्ञानी पुरुष का आशय केवलज्ञान स्वरूप में रहने का ही है लेकिन इस काल की वजह से, काल के हिसाब से, अखंड रूप से केवलज्ञान स्वरूप में नहीं रह पाते। लेकिन उनका आशय तो ऐसा ही है कि निरंतर केवलज्ञान स्वरूप में ही रहना है। क्योंकि वे 'खुद' 'केवलज्ञान स्वरूप' को जानते हैं। केवलज्ञान स्वरूप को जान पाते हैं, दुनिया का और कुछ भी नहीं जान पाते। इस काल का इतना ज़बरदस्त इफेक्ट है कि केवलज्ञान स्वरूप में नहीं रहा जा सकता। जैसे कि दो इंच के पाइप में से फोर्स से पानी आए तो उसके सामने उँगली रखने पर वह हट जाती है और यदि आधे इंच के पाइप में से पानी आए तो उँगली नहीं हटती। उसी तरह से इस काल का इतना ज़ोर है! ज्ञानी पुरुष को भी बैलेन्स में नहीं रहने देता!

चार मार्क की वजह से पूरा मोक्ष रुका हुआ है और इस काल चक्र की वजह से मैं बैठा हुआ हूँ। लोगों का कल्याण होना होगा इसीलिए बैठा रहा। उससे हमें कोई नुकसान भी नहीं है। लोगों का कल्याण हो। हम तो मोक्ष में ही रहते हैं।

प्रश्नकर्ता : लेकिन दादा, सिर्फ, चार मार्क ही रह गए थे न, आपको तो मूल वस्तु पकड़नी थी न?

दादाश्री : उसमें भी उनकी कोई भूल नहीं है, वे तो कहते हैं कि आपको अभी पास कर देते हैं। पेपर जाँचने में हमारी भूल हो गई है। मैं कहता हूँ, 'नहीं भाई, आप ऐसी माथापच्ची मत करना। मुझे यह बात सुनने की फुरसत नहीं है। आप मार्क बढ़ाने की बात मेरे पास मत करना। मैं तो स्वतंत्र हो चुका हूँ। यदि आप मार्क बढ़ा दोगे तो मुझे परतंत्र होना पड़ेगा। हाँ, हमारे ये एक ही ऊपरी(बॉस) हैं, सीमंधर स्वामी!'

मुझे चार डिग्री पूर्ण करनी पड़ेंगी न!

केवलज्ञान में, परीक्षा में फेल हो गया इसलिए फिर मुझे दोबारा परीक्षा तो देनी पड़ेगी न? मुझे चार डिग्री पूर्ण करनी पड़ेंगी न? इसलिए मैं भी इस तरह से नमस्कार करता हूँ। लोग पूछते हैं कि 'क्या आप ही दादा भगवान हो?' मैंने कहा 'नहीं, भाई, ये तो भादरण के पटेल हैं, हम ज्ञानी पुरुष हैं। और जो ऊपरी हैं, दूसरे भगवानों के भी ऊपरी, वे दादा भगवान जो भीतर हैं, वे हैं!'

भीतर जो स्वरूप प्रकट हुआ है, वे दादा

भगवान हैं, ये दादा भगवान नहीं हैं। ये दादा भगवान तब कहलाते जब वे भगवान महावीर जैसे बन जाते। शरीर भी आत्मा जैसा ही बन गया होता तो ये भी दादा भगवान कहलाते। लेकिन अभी हमारी चार डिग्री कम हैं। यदि ये चार डिग्री पूर्ण हो जाएँ तो यह मूर्ति पूर्ण हो जाएगी, फिर वैसे दर्शन करना।

लेकिन भीतर एकदम अलग ही हो गया है। इस देह से आत्मा निरंतर अलग ही रहता है, एक क्षण के लिए भी एक नहीं हुआ है लेकिन फिर भी मुझे नमस्कार करना पड़ता है, क्योंकि चार डिग्री कम हैं इसलिए और आपको भी कहता हूँ कि भाई, आप भी दादा भगवान को नमस्कार करो। इस तरह से करना अब। और आप निरंतर ऐसा बोलते रहना। दिस इज़ द कैश बैंक ऑफ डिवाइन सॉल्यूशन! ऐसी कैश बैंक कभी भी नहीं खुला।

चौदह लोकों के नाथ दिखलाते हैं ये दोष

प्रश्नकर्ता : आप जो कहते हैं न, कि भीतर चौदह लोकों के नाथ प्रकट हुए हैं, तो वे चौदह लोकों के नाथ जो आपको प्रकट हुए अनुभव में आते हैं, उनका किस तरह का अनुभव है आपका?

दादाश्री : क्या अनुभव चाहिए?

प्रश्नकर्ता : चौदह लोकों के नाथ जो कहते हैं न! चौदह लोकों के नाथ जो भीतर बैठे हुए हैं, वे प्रकट हुए हैं। तो उनका अनुभव यों उनकी स्व-सत्ता की वजह से रहता है?

दादाश्री : नहीं! अभेदता लगनी चाहिए न! सभी के साथ एकता लगनी चाहिए। संसार के जीवमात्र के साथ एकता लगनी चाहिए। भेदभाव नहीं लगना चाहिए।

प्रश्नकर्ता : तो आपको यों स्पष्ट रूप से एकता लगती है?

दादाश्री : एकता ही लगती रहती है। अत: किसी का दोष नहीं दिखाई देता हर कोई निर्दोष ही दिखाई देता है, यह सब देखा, वही पूर्ण दशा और अनंत शक्तियाँ हैं, अपार!

प्रश्नकर्ता : वे शक्तियाँ कैसी होती हैं? हमें सभी शक्तियों के बारे में पता चलता है न?

दादाश्री : सब है न! सारी शक्तियाँ हैं लेकिन ये सब संसार में से मुक्त करने वाली शक्तियाँ! सांसारिक शक्तियाँ नहीं, संसार में से मुक्त करने वाली! अत: सभी को, जैसी परेशानी हो उस अनुसार सभी से कह भी देते हैं कि 'भाई, तू ऐसा करना, तू ऐसा करना।'

प्रश्नकर्ता : तो क्या उन शक्तियों का हमें अनुभव होता है?

दादाश्री : सभी शक्तियों का अनुभव होता है और वे प्रकट होती हैं।

'यह मेरा नहीं है' ऐसा कहने का क्या कारण है? कि हमारे ज़रा से दोष, जिन्हें यह संसार समझ न सके, ऐसे सूक्ष्मतम दोष भी वे हमें दिखाते हैं। अत: वे दिखाने वाले हैं और हम जानने वाले हैं। उनके दिखाने की वजह से हम इन दोषों को जान पाए। अत: वह जो पूर्ण अवतार हैं, पूर्ण दशा है, वे चौदह लोकों के नाथ हैं, पूर्ण प्रकट! एक भी दोष दिखाए बगैर नहीं रहते। वे आपकी स्थिति के अनुसार, आपमें प्रकट होते हैं और फिर उस अनुसार आपको दिखाते हैं।

दोष हैं तब तक नहीं है वह खुद की दशा

प्रश्नकर्ता : दादाजी, चौदह लोकों के नाथ प्रकट हुए, उसका आपको कैसे पता चला? भीतर सब खुलासा हो गया, उस समय क्या अनुभव हुआ? उस स्थिति का पता चला?

दादाश्री : सभी अनुभव हो गए न! उस दशा से जो शक्ति उत्पन्न हुई, वह खुद को दिखाई दी। जो सारी शक्ति उत्पन्न हुई वह खुद को दिखाई दी।

प्रश्नकर्ता : सब एकदम ही अलग हो जाता है?

दादाश्री : नहीं, नहीं। ऐसी सारी शक्तियाँ, संपूर्ण रूप से वे शक्तियाँ उत्पन्न होती हुई दिखाई दीं। सबकुछ दिखाई दिया, लेकिन वह संसार के काम का नहीं है न! संसार तो पौद्गलिक चीज़ों को ढूँढता है।

सारे सूक्ष्मतम दोष दिखाती हैं। एक भी बाकी नहीं रहता। खुद की पूर्ण होने की दशा उत्पन्न होती है। जब तक दोष है तब तक वह खुद की दशा नहीं कहलाती! चाहे कितना भी सूक्ष्मतम लेकिन जब तक दोष है तब तक वह खुद की दशा नहीं कहलाएगी। खुद का है, ऐसा कहना जोखिम है। जिन लोगों को समझ नहीं हैं, वे जोखिम उठाएँगे! लेकिन कोई समझदार तो ज़िम्मेदारी लेगा ही नहीं न!

भूल रहित दर्शन और भूल वाला वर्तन

खुद की भूल का पता खुद को चले वह भगवान बन जाए।

प्रश्नकर्ता : इस तरह कोई भगवान बना है?

दादाश्री : जितने भी व्यक्ति भगवान बने हैं, उन सभी को खुद की भूल का पता खुद को चला था और भूल को मिटाया था वे ही भगवान हुए। वे भूल को इस तरह मिटा देते हैं कि भूल रहे नहीं। सारी भूलें दिखाई देती हैं।

स्थूल भूलें तो आपसी टकराव होने पर बंद हो जाती हैं लेकिन सूक्ष्म, सूक्ष्मतर, सूक्ष्मतम भूलें इतनी अधिक होती हैं कि वे जैसे-जैसे खत्म होती जाती हैं, वैसे-वैसे इंसान की सुगंध आती जाती है।

अब, भूल किसे दिखाई देती है? तब कहते हैं, जिसकी खुद की श्रद्धा में है भूल रहित चारित्र! हाँ, और भूल वाला वर्तन, वर्तन में है, उसे भूल दिखाई देती है। भूल रहित चारित्र उसकी श्रद्धा में हो, भूल रहित चारित्र पूर्ण रूप से दर्शन में हो और भूल वाला वर्तन उसके वर्तन में हो, तो उसे हम मुक्त हुआ कहते हैं। भूल वाला वर्तन भले ही रहा लेकिन उसके दर्शन में क्या है?

एक सूक्ष्म से सूक्ष्म भूल रहित चारित्र कैसा होना चाहिए? वह भीतर दर्शन में होना चाहिए। दर्शन में सूक्ष्म से सूक्ष्म भूल भी नहीं रहे, ऐसा दर्शन होना चाहिए। तभी भूल दिखेगी न! देखने वाला 'क्लियर' हो, तभी देख सकता है। इसीलिए हम कहते हैं न, कि तीन सौ साठ डिग्री वाले जो भगवान हैं न, वे संपूर्ण 'क्लियर' (शुद्ध) हैं और हमारा 'अन्क्लिअरन्स' दिखाते हैं। यह ज्ञान मिलने के बाद, सभी में 'दो' तो हैं ही। उन लोगों में भी 'दो' होते ही हैं। जिन्हें ज्ञान नहीं मिला उनमें भी 'दो' होते है और इनमें भी 'दो' हैं।

इस ज्ञान के बाद अंदर और बाहर देख सकते हैं। अंदर भूल रहित चारित्र ऐसा है, ऐसा वे दर्शन में देख सकते हैं! और भूल रहित चारित्र उसके दर्शन में जितना ऊँचा गया, उतनी ही, वे भूलें उसे दिखाई देती हैं। भीतर जितना ट्रान्सपेरेन्ट (पारदर्शक) और क्लियर हुआ, दर्पण शुद्ध हुआ कि तुरंत अंदर दिखाई देता है। उसमें झलकती हैं भूलें! आप में भी भूलें झलकती हैं क्या, अंदर?

प्रश्नकर्ता : दिखाई देती हैं। भूल रहित चारित्र जिसके दर्शन में हो और भूल वाला चारित्र जिसके वर्तन में हो, उससे दिखाई देती हैं?

दादाश्री : उससे तुरंत पता चलता है कि दर्शन भूल रहित है। भूल रहित का चारित्र जिसे दर्शन में होता है, वह कह देता है कि यह भूल हुई।

निष्पक्षपाती दृष्टि दिखाए निजदोष

'स्वरूप ज्ञान' के बिना तो भूल दिखाई नहीं देती है क्योंकि 'मैं ही चंदूभाई हूँ और मुझ में कोई दोष नहीं है, मैं तो समझदार हूँ,' ऐसा रहता है और 'स्वरूप ज्ञान' की प्राप्ति के बाद आप निष्पक्षपाती हुए, मन-वचन-काया पर आपको पक्षपात नहीं रहा इसलिए खुद की भूलें, आपको खुद को दिखाई देती हैं। जिसे खुद की भूल पता चलेगी, जिसे प्रतिक्षण अपनी भूल दिखाई देगी, जहाँ-जहाँ हो वहाँ दिखे, नहीं हो वहाँ नहीं दिखे, वह खुद 'परमात्मा स्वरूप' हो गया! 'वीर भगवान' हो गया!!!

'यह' ज्ञान प्राप्त करने के बाद खुद निष्पक्षपाती हो गया। क्योंकि 'मैं चंदूभाई नहीं, मैं शुद्धात्मा हूँ' यह समझने के बाद ही निष्पक्षपाती हो पाते हैं। किसी का ज़रा सा भी दोष नहीं दिखे और खुद के सभी दोष दिखे, तभी खुद का कार्य पूरा हुआ कहलाता है। पहले तो 'मैं ही हूँ' ऐसा रहता था इसलिए निष्पक्षपाती नहीं हुए थे। अब निष्पक्षपाती हुए इसलिए खुद के सभी दोष दिखाई देने शुरू हुए और उपयोग अंदर की तरफ ही रहता है इसलिए दूसरों के दोष नहीं दिखाई देते हैं! खुद के दोष दिखाई देने लगे, इसलिए 'यह ज्ञान' परिणमित होना शुरू हो जाता है। खुद के दोष दिखाई देने लगे इसलिए दूसरों के दोष नहीं दिखाई देते।

इस निर्दोष जगत् में जहाँ कोई दोषित है ही नहीं, वहाँ किसे दोष दें? दोष है, तब तक दोष, वह अहंकार भाग है और जब तक वह भाग धुलेगा नहीं, तब तक सारे दोष निकलेंगे नहीं, तब तक अहंकार निर्मूल नहीं होगा। जब तक अहंकार निर्मूल न हो जाए, तब तक दोष धोने हैं।

संपूर्ण निष्पक्षपातीपन आने पर ही खुद, खुद के सभी दोष देख सकता है।

अनंत जन्मों का पृथक्करण

ये सब तो मेरी पृथक्करण की हुई चीज़ें हैं और ये सभी एक जन्म की चीज़ें नहीं हैं। एक जन्म में क्या इतने सारे पृथक्करण हो सकते हैं? अस्सी सालों में कितने पृथक्करण हो सकते हैं? यह तो कितने ही जन्मों का पृथक्करण है, वह सब आज हाज़िर हो रहा है।

प्रश्नकर्ता : इतने सारे जन्मों का पृथक्करण, वह इकट्ठा होकर आज किस तरह हाज़िर होता है?

दादाश्री : आवरण टूट गया इसलिए। अंदर ज्ञान तो है ही सारा। आवरण टूटना चाहिए न! ज्ञान की पूँजी तो है ही लेकिन आवरण टूटने पर प्रकट होता है!

सभी फेज़िज़ का ज्ञान मैंने ढूँढ निकाला है। हर एक 'फेज़िज़' में से मैं गुज़र चुका हूँ और हर एक 'फेज़' का मैं एन्ड ला चुका हूँ। उसके बाद यह 'ज्ञान' हुआ है।

प्रकट होता है केवलज्ञान, अंतिम दोष जाते ही

'मुझ में भूल है ही नहीं' ऐसा तो कभी भी नहीं बोल सकते, बोल ही नहीं सकते। 'केवल' होने के बाद ही भूलें नहीं रहतीं। भगवान महावीर को केवलज्ञान उपजा, तब तक दोष दिखाई देते थे। भगवान को केवलज्ञान उपजा, वह काल और खुद के दोष का दिखाई देने बंद होने का काल, एक ही था! वे दोनों ही समकालीन थे। अंतिम दोष का दिखाई देना बंद होना और इस तरफ केवलज्ञान प्रकट हो जाना, ऐसा नियम है। जागृति

तो निरंतर बनी रहनी चाहिए। यह तो दिन में भी आत्मा को बोरे में बंद रखोगे तो कैसे चलेगा। दोषों को देखकर धोने से आगे बढ़ सकते हैं, प्रगति हो सकती है, नहीं तो फिर भी आज्ञा में रहने से लाभ तो है, उससे आत्मा में रह पाएँगे।

जब हर क्षण दोष देखेंगे तब काम होगा

प्रश्नकर्ता : दादा ने कहा है, 'तेरी ही किताब पढ़ता रह, अन्य कोई किताब पढ़ने जैसी नहीं है। यह खुद की ही जो पुद्गल किताब है, यह मन-वचन-काया की, उसी को पढ़, अन्य कुछ पढ़ने जैसा नहीं है!'

दादाश्री : इसे पढ़ना आसान नहीं है भाई! वह 'वीर' का काम है। आसान होने के बावजूद भी आसान नहीं है। मुश्किल होने के बावजूद भी आसान है। हम निरंतर इस ज्ञान में रहते हैं लेकिन फिर भी महावीर भगवान की तरह नहीं रह पाते। उस तरह से तो 'वीर' ही रह सकते हैं! हमारी तो चार अंश की कमी हैं! इतना भी नहीं चल सकता न वहाँ पर! लेकिन दृष्टि वहीं की वहीं रहती है।

तीर्थंकर भगवान निरंतर खुद के ज्ञान में ही रहते थे। ज्ञानमय परिणाम ही थे। ज्ञान में कैसे रहते होंगे? ऐसा कौन सा ज्ञान उन्हें होना बाकी है कि उन्हें उसमें रहना पड़े? जो केवलज्ञान की सत्ता पर बैठे हुए पुरुष हैं तो कौन सा ज्ञान बाकी है कि जिसमें उन्हें रहना हो, तो वह है खुद के एक पुद्गल में ही दृष्टि रखकर उसी को देखते रहते थे। निरंतर एक ही पुद्गल में दृष्टि रखी। सभी पुद्गल का जो है, वही एक पुद्गल में है। खुद के पुद्गल का ही देखना है जो कि विलय हो जाता है!

आत्मा निर्दोष है लेकिन निजदोष को लेकर बंधा हुआ है। जितने दोष दिखते जाएँ, उतनी ही मुक्ति अनुभव में आती है। किसी-किसी दोष की तो लाख-लाख परतें होती हैं, इसलिए वे लाख-लाख बार देखने पर निकलते जाते हैं। दोष तो मन-वचन-काया में भरे हुए हैं ही। हम ने खुद ज्ञान में देखा है कि जगत् किससे बंधा हुआ है। मात्र निजदोष से बंधा है। निरा भूलों का भंडार अंदर भरा पड़ा है। प्रतिक्षण दोष दिखाई दें तब काम हुआ कहलाता है! यह सब माल आप भरकर लाए हो, वह पूछे बिना का ही है न! शुद्धात्मा का लक्ष (जागृति) बैठा, इसलिए भूलें दिखाई देती हैं। फिर भी भूलें नहीं दिखाई दें, वह तो निरा प्रमाद कहलाएगा।

केवलज्ञान तक पुरुषार्थ चलता रहेगा

यदि मोक्ष में जाने की कोई भावना हो, यदि कुछ प्राप्त करने की भावना हो न, तो उसी में तन्मयाकार वृत्ति रहनी चाहिए यानी कि उस तरफ की तीव्रता रहनी चाहिए। तीव्रता अर्थात् खुद का ज़बरदस्त पुरुषार्थ रहना चाहिए।

पुरुषार्थ तो, पुरुष हुए बगैर नहीं हो सकता। जब जागृत होगा, तो खुद की भूलें दिखाई देने लगेंगी, निष्पक्षपाती रूप से दिखाई देने लगेंगी। जब चंदूभाई का एक-एक दोष समझ में आ जाएगा, तब निष्पक्षपातीपना उत्पन्न होगा। जजमेन्ट पावर (निर्णय शक्ति) आ जाने के बाद यथार्थ पुरुषार्थ किया जा सकेगा।

अपने वाणी, वर्तन और विनय में बदलाव हो रहा है या नहीं उसका भी आपको स्टडी करते रहना चाहिए। वाणी में थोड़ा-थोड़ा बदलाव होता है या नहीं? दादा जैसा बनना ही होगा न? तभी मोक्ष में जा पाएँगे। मोक्ष में तो एक ही प्रकार की क्वॉलिटी होनी चाहिए न! सौ प्रतिशत शुद्ध पूर्ण! उसमें दस प्रतिशत चल सकता है क्या? अतः यह पूर्ण शुद्धिकरण का मार्ग है।

- जय सच्चिदानंद

दादाई जगकल्याण मिशन - सत्संग हाइलाईट्स

27-30 जून : अमरीका के बून में पहली बार पूज्यश्री के सानिध्य में नोर्थ-वेस्ट रीजियन के महात्माओं के लिए शिविर का आयोजन हुआ। इस शिविर में 375 महात्मा उपस्थित थे। इस शिविर में सत्संग, मोर्निंग वॉक और व्यक्तिगत मार्गदर्शन के लिए 'दादा दरबार' का आयोजन हुआ था। आप्तपुत्र द्वारा LMHT बच्चों के साथ सत्संग हुआ, जिसमें बच्चों ने अपने प्रश्नों के समाधान पाए। यह शिविर प्राकृतिक सौंदर्य से भरपूर आर्ट ऑफ लिविंग के सेन्टर में आयोजित की गई। सेन्टर के संचालक ने आर्ट ऑफ लिविंग के श्री श्री रविशंकर जी के साथ पूज्यश्री का विडियो कॉन्फरन्स कॉल करवाया, जिसमें पूज्यश्री ने उनके साथ बातचीत की। उनके सेन्टर में शिविर का आयोजन होने की वजह से श्री श्री रविशंकरजी ने बहुत खुशी व्यक्त की।

3-7 जुलाई : पेन्सिलवेनिया के लैंकेस्टर शहर में, पूज्यश्री के सानिध्य में अमरीका के नोर्थ-ईस्ट रीजियन की शिविर का आयोजन वायधाम लैंकेस्टर रिसोर्ट एन्ड कन्वेन्शन सेन्टर में हुआ। महात्माओं ने पूज्यश्री के साथ इन्फॉरमल समय बिताया, जिसमें वे बस टूर, ऐतिहासिक स्टार बक रेल रोड राईड और मेनोनाइट चर्च भी गए थे। वहाँ पर पूज्यश्री ने जगत् कल्याण के लिए भावना की थी। आमीस टूर में यह दर्शाया गया था कि आज के मोडर्न युग में भी लोग किस तरह से भौतिक साधनों जैसे कि बिजली, मोबाइल फोन, कार के बगैर रह सकते हैं। 8 जुलाई को पूज्य नीरू माँ का ज्ञान-डे मनाया गया, जिसमें विशेष भक्ति, नाटक 'सेवा में उल्टा चश्मा' और गरबा का भी आयोजन किया गया। इस शिविर में युवा भाई-बहनों ने दिल से सेवा की। जिसमें शिविर का आयोजन, महात्माओं के लिए ट्रान्स्पोर्टेशन, LMHT के बच्चों के सेशन जैसी विविध सेवाओं में युवाओं ने अपना उत्साह दिखाया। युवाओं के लिए विशेष रूप से आप्तपुत्र सत्संग का आयोजन किया गया।

12-17 जुलाई : अमरीका के साउथ सेन्ट्रल रीजियन के सेन्टरों द्वारा ह्यूस्टन में गुरु पूर्णिमा के भव्य महोत्सव का आयोजन हुआ। देश-विदेश से लगभग 3000 महात्माओं ने इस महोत्सव में भाग लिया। यह कार्यक्रम ह्यूस्टन में हिल्टन अमरीकन होटल में हुआ। युवा सेवार्थियों ने इस महोत्सव में दिल से सेवा की। गुरुपूर्णिमा में पूज्यश्री के कुल 7 सत्संग हुए, जिनमें से दो सेशन में 'आप्तवाणी-1 : वाणी का विज्ञान, दूसरे दो सेशन में ज्ञानी पुरुष का अंतर तप' और बाकी के 3 सेशन में जनरल प्रश्नोत्तरी और अनुभव सेशन हुए। इन सत्संग में अपने ज्ञान में आगे बढ़ने के लिए महात्माओं ने ज़रूरी चाबियाँ पूज्यश्री से प्राप्त की। ज्ञान विधि में 325 मुमुक्षुओं ने आत्मज्ञान प्राप्त किया। इस महोत्सव में शोभा यात्रा निकाली गई। इस शोभा यात्रा में पहला रथ सीमंधर स्वामी का, दूसरा परम पूज्य दादाश्री और पूज्य नीरू माँ का और तीसरा रथ पूज्यश्री का था। इस शोभा यात्रा में YMHT+ के युवाओं ने रथ खींचा। सीमंधर स्वामी के रथ में समोवसरण की रचना की गई थी। इस शोभा यात्रा में सीमंधर स्वामी का जीवन परिचय, स्वामी का जन्म और देवताओं द्वारा उनका प्रक्षाल और स्वामी को उनके मित्रों के साथ खेलते हुए दिखाया गया। यह प्रदर्शन LMHT के बच्चों द्वारा किया गया। YMHT की बहनों ने सीमंधर स्वामी की दीक्षा को दर्शाता हुआ सुंदर नृत्य और अंत में समोवसरण की रचना की थी। शोभा यात्रा के बाद, महात्माओं द्वारा लाई गई सीमंधर स्वामी की प्रतिमाओं की प्राण प्रतिष्ठा पूज्यश्री द्वारा हुई। इस महोत्सव में अमरीका के सेवार्थी महात्माओं द्वारा 'अक्रम लेब' का प्रदर्शन किया गया, जो कि JJ-111 में भी एक डोम में प्रदर्शित किया था। उसका बहुत अच्छा रिस्पोन्स मिला। पंद्रह जुलाई को दोपहर में विज्ञान मेले का आयोजन किया गया, जिसका आयोजन LMHT और YMHT के बच्चों ने मिलकर किया। जिसमें बच्चों ने राखी और रंगोली बनाई। अन्य खेलों के साथ लड्डू बनाने की एक्टिविटी भी की। गुरुपूर्णिमा के दिन पूज्यश्री ने जगत् कल्याण की भावना की सामायिक करवाई और गुरुपूर्णिमा के संदेश में 'दोषों के उपराणा न लें' इस विषय पर पुरुषार्थ करने के बारे में समझया। परम पूज्य दादाश्री और सभी देवी-देवताओं के पूजन के बाद उनकी आरती की गई। महात्माओं ने बारी-बारी से पूज्यश्री के दर्शन किए। पूज्यश्री द्वारा अगले साल की गुरुपूर्णिमा वेस्ट कोस्ट में फिनिक्स में मनाने की घोषणा की गई। जिसका कॉन्सेप्ट महात्माओं को 'क्लियर विज़न' कैसे प्राप्त हो रहेगा।

20-22 जुलाई : पूज्यश्री के सानिध्य में शिकागो में तीन दिवसीय सत्संग व ज्ञानविधि का आयोजन हुआ। पहले दिन महात्माओं के लिए 'दादा दरबार' रखा गया। GNC के बच्चों ने पूज्यश्री का स्वागत किया था। सत्संग हॉल में पूज्यश्री के स्टेज के पीछे 'I Promise to...' नाम का पोस्टर लगाया गया। जिसमें महात्माओं ने पूज्यश्री से एक साल के लिए अलग-अलग तरह के प्रॉमिस किए। शाम को प्रश्नोत्तरी सत्संग में ज्ञानविधि के बारे में और चार स्टेप, पाँच लेवल पर विशेष सत्संग हुआ। रविवार को सुबह ज्ञानविधि के बारे में आप्तपुत्र द्वारा बेसिक सत्संग हुआ और शाम को हुई ज्ञानविधि में 170 मुमुक्षुओं ने आत्मज्ञान प्राप्त किया। सोमवार को सुबह महात्माओं ने पूज्यश्री के साथ इन्फॉरमल समय बिताया, जिसमें मोर्निंग वॉक और सत्संग हुए। शाम को GNC के बच्चों के साथ विशेष सत्संग हुआ, जिसमें पूज्यश्री से बच्चों ने खुद के प्रश्नों के समाधान पाए।

27-28 जुलाई : अमरीका के वेस्ट कोस्ट रीजियन में महात्माओं के लिए केलिफोर्निया के प्रसिद्ध लेक एरोहेड रिसोर्ट में चार दिवसीय शिविर का आयोजन हुआ, जिसमें 300 महात्माओं ने भाग लिया। इस शिविर में पूज्यश्री के सत्संग के तीन सेशन हुए। जिसमें टॉपिक 1. 'प्रिज्युडीस, कितना नुकसानदेह है!' 2. 'आत्म-अनुभव की कक्षा का थर्मामिटर क्या?' और जनरल सत्संग भी हुए। महात्माओं ने सांस्कृतिक कार्यक्रमों में नाटिका, एकांकी अभिनय, मिमिक्री भी की। इनके साथ-साथ मोर्निंग वॉक गरबा, आउट डोर इन्फॉरमल सत्संग भी हुए। पूज्यश्री के सानिध्य में महात्मा बहुत रोमांचित और प्रसन्न थे। इसके साथ केलिफोर्निया के अरटेसिया में सनातन धर्म टेम्पल में सत्संग-ज्ञानविधि के कार्यक्रम का आयोजन हुआ, जिसमें 700 महात्माओं ने भाग लिया। शनिवार को शाम को हुए सत्संग में मुमुक्षुओं ने जिज्ञासा पूर्वक प्रश्न पूछे। रविवार को सुबह आप्तपुत्र द्वारा ज्ञानविधि से संबंधित बेसिक सत्संग हुआ। शाम को हुई ज्ञानविधि में 144 मुमुक्षुओं ने आत्मज्ञान प्राप्त किया। स्थानीय महात्माओं ने नि:स्वार्थ भाव से कषाय रहित सेवा की।

भारत में पूज्य नीरूमाँ / पूज्य दीपकभाई को देखिए टी.वी. चैनल पर...

भारत
- **'दूरदर्शन'-नेशनल** पर सोम से शनि सुबह 8-30 से 9, रवि सुबह 6-30 से 7
- **'दूरदर्शन'-मध्यप्रदेश** पर सोम से शनि दोपहर 3-30 से 4, रवि शाम 6 से 6-30 (हिन्दी में)
- **'दूरदर्शन'-बिहार** पर हर रोज़ शाम 6-30 से 7 तथा सुबह 7 से 7-30 (हिन्दी में)
- **'दूरदर्शन'-उत्तरप्रदेश** पर शनि से बुध रात 9-30 से 10 (हिन्दी में)
- **'उड़ीसा प्लस' टीवी** पर हर रोज़ सुबह 7-30 से 8 (हिन्दी में)
- **'दूरदर्शन'-सह्याद्रि** पर हर रोज़ सुबह 7 से 7-30 (मराठी में)
- **'दूरदर्शन'-चंदना** पर सोम और शुक्र रात 7-30 से 8 (कन्नड़ में)
- **'दूरदर्शन' गुजरात - गिरनार** पर सोम से शनि दोपहर 3-30 से 4 (गुजराती में)
- **'दूरदर्शन'-गिरनार** हर रोज़ पर सुबह 9 से 9-30 तथा हर रोज़ रात 10 से 10-30 (गुजराती में)
- **'अरिहंत'** पर हर रोज़ सुबह 3-30 से 4-30, दोपहर 2-30 से 3 तथा रात 8 से 9 (गुजराती में)

USA-Canada
- **'Rishtey-USA'** पर हर रोज़ सुबह 7 से 7-30 तथा 8 से 8-30 (हिन्दी में) EST
- **'TV Asia'** पर हर रोज, सुबह 7-30 से 8 EST (गुजराती में)

UK
- **'वीनस' टीवी** पर हर रोज़ सुबह 8 से 8-30 (हिन्दी में)
- **'Rishtey-UK'** पर हर रोज़ सुबह 7 से 7-30 Western European Time (6am-6-30am GMT)
- **'वीनस' टीवी** पर हर रोज़ सुबह 8-30 से 9 (गुजराती में)
- **'MA TV'** पर हर रोज, शाम 5-30 से 6-30 (गुजराती में)

CAN-Fiji-NZ-Sing.-SA-UAE **Rishtey-Asia'** पर हर रोज़ सुबह 7 से 7-30 तथा 8 से 8-30 (हिन्दी में) EST

USA-UK-Africa-Aus. **'आस्था'** (डीश टीवी चेनल 849-युके, 719-युएसए) पर सोम से शुक्र रात 10 से 10-30

आत्मज्ञानी पूज्य नीरू माँ और पूज्य दीपकभाई के आशीर्वाद प्राप्त आप्तपुत्रों के सत्संग कार्यक्रम

छत्तीसगढ़

रायपुर **दिनांक : 6 व 8 अक्तूबर** **समय :** सुबह 10 से 12 **संपर्क :** 9179025061
स्थल : दादा भगवान सत्संग सेंटर, गुजराती लुहार समाज भवन, अशोक विहार कॉलोनी, गोंदवारा, रायपुर.

रायपुर **दिनांक : 6 अक्तूबर** **समय :** शाम 4 से 6 **संपर्क :** 8889837889
स्थल : देवांगन ट्रेडर्स और कृषि केंद्र, PNB ATM के पास, चंदखुरी फार्म, चंदखुरी, जिला - रायपुर.

बिलासपुर **दिनांक : 7 अक्तूबर** **समय :** शाम 4-30 से 6-30 **संपर्क :** 9893294060
स्थल : जैन भवन, गुजराती समाज के सामने, टिकरापारा, बिलासपुर.

रायपुर **दिनांक : 11 अक्तूबर** **समय :** शाम 4 से 6 **संपर्क :** 9425215512
स्थल : स्वाध्याय केंद्र, कॉलेज रोड, जिला तहसील के सामने, महासमुंद.

भिलाई **दिनांक : 12 अक्तूबर** **समय :** शाम 4-30 से 7 **संपर्क :** 9893601301
स्थल : दादा भगवान सत्संग सेंटर, मरोड़ा, भिलाई.

राजनांदगांव **दिनांक : 13 अक्तूबर** **समय :** सुबह 10 से 12 **संपर्क :** 9893601301
स्थल : लोहाना महाजन वाडी, रेल्वे स्टेशन रोड, राजनांदगांव.

बालोद **दिनांक : 13 अक्तूबर** **समय :** शाम 4 से 6-30 **संपर्क :** 9893601301
स्थल : दिल्लीवार कुर्मी भवन, गायत्री मंदिर के पास, नया बस स्टैंड बालोद.

दुर्ग **दिनांक : 14 अक्तूबर** **समय :** शाम 4-30 से 7 **संपर्क :** 9893601301
स्थल : श्री रमेश राठौर का मकान, गुजराती आटा चक्की के पास (वासुदेव चंद्रकर गली), संतराबाड़ी, दुर्ग.

उड़ीसा

बरगढ़ **दिनांक : 9 अक्तूबर** **समय :** शाम 6 से 9 **संपर्क :** 8658090042
स्थल : बीजू पटनायक टाउन हॉल, जॉर्ज हाई स्कूल, बंडू टिकरा रोड, बरगढ़.

सम्बलपुर **दिनांक : 10 अक्तूबर** **समय :** शाम 4-30 से 6 **संपर्क :** 8658090042
स्थल : जलाराम मंदिर, गुजरात कॉलोनी, G.M. कॉलेज रोड, सम्बलपुर.

कटक **दिनांक : 12 अक्तूबर** **समय :** शाम 5-30 से 8 **संपर्क :** 8480800788
स्थल : गांधी भवन, उत्कल गांधी साम्रक निधि, सनशाइन फील्ड के पास, बखारबाद, कटक.

भुवनेश्वर **दिनांक : 13 अक्तूबर** **समय :** सुबह 10 से 6 **संपर्क :** 8763073111
स्थल : गीता गोबिंद सदन, जयदेव भवन के पास, यूनिट-2, अशोक नगर.

भुवनेश्वर **दिनांक : 14 अक्तूबर** (स्थल की जानकारी के लिए, नंबर पर संपर्क करे) **संपर्क :** 8763073111

झारखंड

राँची **दिनांक : 15 अक्तूबर** **समय :** शाम 4 से 6 **संपर्क :** 8092543226
स्थल : गेट नं. 1 एवं 2, अशोक नगर देवालय एवं चिंतन स्थल, अशोक नगर, राँची.

सिल्ली **दिनांक : 16 अक्तूबर** **समय :** शाम 4 से 6-630 **संपर्क :** 7979971120
स्थल : थ्रिल भवन, काली मंदिर के पास, मैन रोड़, सिल्ली, जिल्ला - राँची.

टाटानगर **दिनांक : 17 अक्तूबर** (स्थल की जानकारी के लिए, नंबर पर संपर्क करे) **संपर्क :** 9931538777

पश्चिम बंगाल

एथेलबारी **दिनांक : 16 अक्तूबर** **समय :** शाम 3-30 से 5-30 **संपर्क :** 9382899417
स्थल : पतंजलि आरोग्य केन्द्र, डबल रास्ता, एथेलबारी, जिल्ला. जलपाईगुड़ी.

लिलुआ **दिनांक : 18 अक्तूबर** **समय :** शाम 5-30 से 8 **संपर्क :** 9830080820
स्थल : उपाश्रय, शान्तिनगर, मेट्रो स्टेशन के पास, लिलुआ, कोलकता.

दादावाणी

बिरलापुर **दिनांक : 19 अक्तूबर** **समय :** सुबह 10 से 6 **संपर्क :** 9007429012
स्थल : बिरला जूट मिल, बिरलापुर, कोलकता.

कोलकता **दिनांक : 20 अक्तूबर** **समय :** सुबह 10 से 4 **संपर्क :** 9830080820
स्थल : श्रीमद् राजचंद्र आत्म तत्त्व रिसर्च सेंटर, कोलकाता.

त्रिपुरा

उदयपुर **दिनांक : 11 अक्तूबर** **समय :** सुबह 11 से 1 **संपर्क :** 9436902835
स्थल : राजर्षी टाउन होल, एस. पी. ऑफिस के सामने, उदयपुर, गोमती, त्रिपुरा.

उदयपुर **दिनांक : 11 अक्तूबर** **समय :** शाम 6 से 8 **संपर्क :** 9436902835
स्थल : गोपाल आचार्यजी, गॉव टाउन सोनामुरा पोस्ट ऑफिस, R K Pur, उदयपुर, त्रिपुरा.

उदयपुर **दिनांक : 12 अक्तूबर** **समय :** शाम 4 से 6 **संपर्क :** 9436902835
स्थल : रामठाकुर सेवा मंदिर, शालगारा, टेपनिया, गोमती, त्रिपुरा.

आसाम

गुवाहाटी **दिनांक : 13 अक्तूबर** **समय :** शाम 4 से 6 **संपर्क :** 7002949660
स्थल : कामख्या सिंग हाउस, घर नं. 82, बेलतला चरिआली, लटकाता रोड़, बक्रपारा के पास में, गुवाहाटी.

गुवाहाटी **दिनांक : 14 अक्तूबर** **समय :** शाम 4 से 6 **संपर्क :** 9864020603
स्थल : श्री जलाराम मंदिर, A.K. देव रोड़, फतहसिंह, अम्बरी, गुवाहाटी.

बक्सा **दिनांक : 15 अक्तूबर** **समय :** शाम 4 से 6 **संपर्क :** 9678358534
स्थल : श्री श्री माधव देव मंदिर, चंतापारा, बक्सा.

बिहार

पूर्णिया **दिनांक : 18 अक्तूबर** **समय :** शाम 4 से 6 **संपर्क :** 9546817581
स्थल : तेरापंथ भवन, सलोनी चौक, गुलाबबाग, पूर्णिया.

कटिहार **दिनांक : 19 अक्तूबर** **समय :** शाम 3 से 5 **संपर्क :** 9931825351
स्थल : श्री खाटू श्याम मंदिर, श्री श्याम भक्त मंडल, अर्गारा चौक, कटिहार.

मुजफ्फरपुर **दिनांक : 20 अक्तूबर (**स्थल की जानकारी के लिए, नंबर पर संपर्क करे) **संपर्क :** 9608030142

वैशाली **दिनांक : 21 अक्तूबर** **समय :** शाम 3 से 6 **संपर्क :** 9934852489
स्थल : शारदा सदन पुस्तकालय, लालगंज, वैशाली.

मध्यप्रदेश

जावरा **दिनांक : 11 अक्तूबर** **समय :** शाम 7 से 9 **संपर्क :** 9424857458
स्थल : विनोदभाई चपदोद, ''अमृत कलश'', 23, सोमवारिया, महावीर स्वामी मार्ग, जावरा, जिल्ला - रतलाम.

उज्जैन **दिनांक : 12 व 13 अक्तूबर** **समय :** शाम 5 से 7 **संपर्क :** 9425195647
स्थल : गुजराती समाज धर्मशाला, वैद नगर, देशमुख हॉस्पिटल के सामने वाला रोड़, सांवेर रोड़, उज्जैन.

इन्दौर **दिनांक : 14 व 15 अक्तूबर** **समय :** शाम 5 से 8 **संपर्क :** 6354602400
स्थल : 1, सेन्ट्रल होल, श्री गुजराती समाज, नसिया रोड़, इंदौर.

अंजड़ **दिनांक : 16 अक्तूबर** **समय :** सुबह 10 से 5 **संपर्क :** 9617153253
स्थल : बावन गजा जैन तीर्थ, बड़वानी.

खरगोन **दिनांक : 17 अक्तूबर** **समय :** शाम 4 से 6 **संपर्क :** 9425643302
स्थल : 77, विश्व साखा कोलोनी, खरगोन, मध्य प्रदेश.

भोपाल **दिनांक : 19 अक्तूबर** **समय :** शाम 4 से 7 **संपर्क :** 9425190511
स्थल : जनक विहार कॉम्प्लेक्स, तीसरा माला, मेडीस्कैन सेंटर के ऊपर, एयरटेल ऑफिस के सामने, मालविया नगर.

भोपाल **दिनांक : 20 अक्तूबर (**स्थल की जानकारी के लिए, नंबर पर संपर्क करे) **संपर्क :** 9425190511

आत्मज्ञानी पूज्य दीपकभाई के सानिध्य में आगामी सत्संग कार्यक्रम

Atmagnani Pujya Deepakbhai's UAE-Kenya Satsang Schedule 2019

Date	Day	City	Session	From	To	Venue	Contact No. & Email
9 Oct	Wed	Dubai	Satsang	7:00 PM	9:30 PM	Grand Excelsior Hotel , Kuwaiti Street, Bur Dubai, Mankhool, Dubai, UAE.	971-557316937 971-501364530 dubai@ae.dadabhagwan.org
10 Oct	Thu	Dubai	Satsang	7:00 PM	9:30 PM		
11 Oct	Fri	Dubai	**Gnanvidhi**	5:00 PM	8:30 PM		
12 Oct	Sat	Nairobi	Aptputra Satsang	7:30 PM	9:00 PM	Sarit Centre Exhibition Hall, Pio Gama Pinto Road, Westlands, Nairobi.	+254 733923232 +254 795923232 info.ke@.dadabhagwan.org
13 Oct	Sun	Nairobi	Aptputra Satsang	11:00 AM	12:30 PM		
13 Oct	Sun	Nairobi	**Gnanvidhi**	5:30 PM	9:00 PM		
14 Oct	Mon	Nairobi	Satsang	7:30 PM	10:30 PM		
18 Oct	Fri	Mombasa	Satsang	7:30 PM	10:00 PM	Hare Krishna Mandir Nyali Road, Mombasa.	+254 733923232 +254 795923232 info@ke.dadabhagwan.org
19 Oct	Sat	Mombasa	**Gnanvidhi**	5:00 PM	8:30 PM		

अडालज त्रिमंदिर

27 अक्तूबर (रवि) रात 8-30 से 10-30 - **दिपावली के अवसर पर विशेष भक्ति**

28 अक्तूबर (सोम), सुबह 8-30 से 1, शाम 5 से 6-30 - **गुजराती नूतन वर्ष के अवसर पर पूजन-दर्शन**

21-28 दिसम्बर - आप्तवाणी 14 (भाग-1) पर सत्संग पारायण

29 दिसम्बर - श्री सीमंधर स्वामी की छोटी प्रतिमाओं की प्राणप्रतिष्ठा

दादाश्री की 112वीं जन्मजयंती तथा मुंबई त्रिमंदिर प्राणप्रतिष्ठा का महोत्सव

7 नवम्बर (गुरु) सुबह 10 से 12-30 - **सत्संग,** शाम 6-30 से 8 - **महोत्सव शुभारंभ,** शाम 8 से 9 - **सत्संग**

8 से 10 नवम्बर (शुक्र-रवि) सुबह 9 से 12 - **प्राणप्रतिष्ठा,** शाम 6-30 से 9 - **सत्संग**

11 नवम्बर (सोम) सुबह 8 से 1 तथा शाम 5 से 8 - **जन्मजयंती के अवसर पर पूजन-दर्शन-भक्ति**

12 नवम्बर (मंगल) सुबह 11 से 12-30 - **आप्तपुत्र सत्संग,** शाम 5-30 से 9 - **ज्ञानविधि**

महोत्सव स्थल : चीकुवाडी ग्राउन्ड, कांति पार्क रोड, सेईन्ट रोक कोलेज के सामने, बोरीवली (वेस्ट).

त्रिमंदिर स्थल : त्रिमंदिर, ऋषिवन, अभिनवनगर रोड, काजुपाडा, बोरीवली (ईस्ट). **संपर्क :** 9323528901

सूचना : 1) इस महोत्सव में भाग लेने हेतु आपको रजिस्ट्रेशन करवाना आवश्यक है। 2) ओढ़ने-बीछाने का चद्दर, एयर पीलो, बेटरी, जरूरी दवाईयाँ साथ में लाएँ। 3) जिनके पास दादा भगवान परिवार का परमनन्ट आई-कार्ड (पहचानपत्र) है, वे आई-कार्ड अवश्य साथ लेकर आएँ। 4) प्राणप्रतिष्ठा त्रिमंदिर स्थल पर रहेगी और बाकी के सभी कार्यक्रम महोत्सव स्थल पर होगें।

अहमदाबाद

22-23 नवम्बर (शुक्र-शनि) रात्र 8 से 11 - **सत्संग**

24 नवम्बर (रवि) शाम 5-30 से 9 - **ज्ञानविधि**

25 नवम्बर (सोम) शाम 8 से 11 - **आप्तपुत्र सत्संग**

स्थल : म्यूनिसिपल ग्राउंड, पूजन बंगलो (राजहंस सिनेमा) के सामने, शुकन चार रस्ता, निकोल. **संपर्क :** 9327081075

त्रिमंदिरो के संपर्क : अडालज : 079-39830100, 9328661166-77, **राजकोट :** 9924343478, **भूज :** 9924345588, **अंजार :** 9924346622, **मोरबी :** 9328661188, **सुरेन्द्रनगर :** 9737048322, **अमरेली :** 9924344460, **वडोदरा:** 9574001557, **गोधरा :** 9723707738, **जामनगर :** 9924343687 **अन्य सेन्टरों के संपर्क : अहमदाबाद:** (079) 27540408, **मुंबई:** 9323528901, **वडोदरा (दादा मंदिर) :** 9924343335, **दिल्ली:** 9810098564, **बैंगलूर:** 9590979099, **कोलकता:** 9830080820

यु.एस.ए.-केनेडा: +1 877-505-DADA (3232), **यु.के.:** +44 330-111-DADA (3232), **ऑस्ट्रेलिया:** +61 421127947

सितम्बर 2019
वर्ष-14 अंक-11
अखंड क्रमांक - 167

दादावाणी

Date Of Publication On 15th Of Every Month
RNI No. GUJHIN/2005/17258
Reg. No. G-GNR-348/2018-2020
Valid up to 31-12-2020
LPWP Licence No. PMG/HQ/036/2018-2020
Valid up to 31-12-2020
Posted at Adalaj Post Office
on 15th of every month.

'केवलदर्शन' दिखाए भूलें

दर्शन तो संपूर्ण है, ज्ञान भी है लेकिन ज्ञान में चार डिग्री कम हैं। इसलिए यह वाणी संपूर्ण रूप से स्याद्वाद नहीं है। हमारे दर्शन में सबकुछ तुरंत ही आ जाता है। तुरंत, भूल का पता चल जाता है। सूक्ष्म से सूक्ष्म भूल का भी तुरंत पता चल जाता है। वैसी भूलों को देखने में अभी तो आपको बहुत टाइम लगेगा। आप तो स्थूल भूलें देखते हो। बड़ी-बड़ी, जो दिखाई देती हैं, वैसी भूलें ही देखते हो। इसलिए हम कहते हैं न, कि हम से दोष होने के बावजूद भी किसी को हमारा दोष दिखाई नहीं देता। हमें खुद को ही दिखाई देता है। स्याद्वाद और अनेकांत में भूल हो गई, ऐसे सारे दोष दिखाई देते हैं। अब, हमारा स्याद्वाद पूर्ण हो रहा है। जब पूर्ण स्याद्वाद आ जाएगा तब केवलज्ञान पूर्ण हो जाएगा। दर्शन है, इसीलिए तो पता चलता है कि 'यह भूल है'।

- दादाश्री

Printed and Published by Dimple Mehta on behalf of Mahavideh Foundation - Owner. Printed at Amba Offset, B-99, GIDC, Sector-25, Gandhinagar-382025.